हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

दिसम्बर, 2004 वर्ष 3 अंक 10

ऐ लोगो अल्लाह की तौहीद पर क़ाईम रहना, किसी को ख़ुदा का शरीक न बनाना, और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सुन्नत पर अमल करना अगर यह दोनों काम तुम ने कर लिये तो हर बुराई तुम से दूर रहेगी।

(हज़रत अली रज़ि० की आखिरी वसीयत)

अगर इस गोले में लाल निशान है तो आपका वार्षिक चन्दा समाप्त हो चुका है। कृपया अपना वार्षिक चन्दा जल्द भेजिए।

—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० ग़ुफ़रान नदवी
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2741235
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :

"सच्चा राही"

पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

विषय एक नज़र में

- इस्लामी अख्लाक़ — सम्पादकीय 3
- कुर्आन की शिक्षा — मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०) 5
- प्यारे नबी की प्यारी बातें — मौलाना सय्यद अ़ब्दुल ह़यी ह़सनी 6
- हिन्दोस्तानी मुसलमान एक नज़र में — मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी 8
- एक महत्वपूर्ण सम्बोधन — मौ० मुह़म्मद राबे हसनी 10
- खुदा की हस्ती — मौ० मु०मंजूर नोमानी 13
- ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) के न्याय की विशेषताएं — डॉ० मु० इज्तिबा नदवी 17
- ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का सन्देश — मौ० मु० सुलैमान नदवी 22
- उम्मुल मोमिनीन उम्मे सल्मा (रज़ि०) — सादिक़ा तस्नीम फ़ारूक़ी 25
- ह़ज़रत ज़ैद बिन ह़ारिसा — मुह़सिना फ़ारूक़ी 27
- शरीर को स्वस्थ रखने के लिए ख़ास जानकारियां — डॉ० देवेन्द्र त्रिपाठी 29
- आप के प्रश्नों के उत्तर — इदारा 30
- रोज़गार की संभावनाएं — ह़बीबुल्लाह आज़मी 31
- जिन्नातों के रहने की जगहें — अबू मर्गूब 33
- तीन हज़ार क़ादियानियों ने तौबा की — अह़रार अख़बार से 34
- मुस्बत कोशिशों को तेज़ करने की ज़रूरत — डॉ० सईदुर्रहमान आज़मी नदवी 35
- अल्लाह की तरफ़ दौड़ो — अबुल बयान ह़म्माद उ़मरी 36
- जो क़ौम अपने अ़क़ीदे की फ़िक्र नहीं करती — मौ०स०राबे ह़सनी नदवी 37
- अमेरिका में दुराचरण की चर्म सीमा — आ़रिफ़ अज़ीज़ 38
- स्वीकार नहीं — ह़ैदर अ़ली नदवी 39
- अन्तर्राष्ट्रीय समाचार — ह़बीबुल्लाह आज़मी 40

इस्लामी अख़्लाक़

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

अख़्लाक जम्अ़ (बहुवचन) है ख़ुल्क़ की और ख़ुल्क़ का मा़ना (अर्थ) है आ़दत, स्वभाव, आचरण। इन्सान के सभी काम उसके खुल्क़ में आते हैं। आ़मतौर से अच्छे अख़्लाक वह कहलाते हैं जिनसे ख़ुद को भी सुकून मिले और दूसरों को भी आराम पहुंचे, दूसरों को उसकी ज़ात से तकलीफ़ न पहुंचे। यह ता़रीफ़ (परिभाषा) ऐसी है जो हर एक को तस्लीम (मान्य) है लेकिन इस्लाम के रसूल मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बताया कि उनको अल्लाह तआ़ला ने अच्छे अख़्लाक पूरे करने ही के लिए दुन्या में भेजा है। अ़रबी शब्द इस प्रकार हैं : "इन्नमा बुअ़िस्तु लिउतम्मिम मकारिमल अख़्लाक़।" इस लिए इस्लाम में अच्छे अख़्लाक़ वही कहलायेंगे जो ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ता़लीमात(शिक्षा)के मुताबिक़ (अनुकूल) हों। जाहिर है इस ता़रीफ़ (परिभाषा) से सभी लोग मुत्तफ़िक़ (सहमत) न होंगे जिस का सबब यह है कि लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अख्लाक से वाक़िफ़ (परिचित) नहीं हैं। आज अगर हमारा अख़्लाक अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ता़लीम के मुताबिक़ होता तो दुन्या के लोग कहते कि अच्छे अख़्लाक की कसौटी मुसलमानों के अख़्लाक़ हैं।

सच्ची बात तो यह है कि इन्सान का हर अ़मल चाहे वह इ़बादात (उपासनाओं) से मुतअ़ल्लिक़ हो चाहे मुआ़मलात (व्योहार) से और चाहे मुआ़शरत (सामाजिकता) से सब की गिन्ती अख़्लाक़ में होगी लेकिन आ़म तौर से अख़्लाक़ का तअ़ल्लुक़ (सम्बन्ध) मुआ़शरत से समझा जाता है तो आइये इस्लामी मुआ़शरत पर एक नज़र डालें।

यह बात तो वाज़ेह (स्पष्ट) है कि इस्लामी अख़्लाक़ की सबसे बड़ी खुसूसीयत (विशेषता) यह है कि मुसलमान यह यक़ीन रखता है कि वह जो कुछ कर रहा है उसको उस का रब देख रहा है और वह नाफ़रमानी की सज़ा से बच नहीं सकता इस लिए वह अख़्लाक़ी ज़ाब्तों को तोड़ने की हिम्मत नहीं करता, जब कि आ़म तौर से अख़्लाक़ के जो ज़ाब्ते बनाए गए हैं उनकी बुन्याद नज़्म व नसक़ बाक़ी रखना है। अच्छे अख़्लाक़ से मुआ़शरे के सभी लोग सुकून व इतमीनान (शान्त) की ज़िन्दगी गुजारते हैं चुनांचे इस्लाम ने अच्छे अअ़माल (अख़्लाक़) वालों से ह़याते तय्यिबा (पाक ज़िन्दगी) देने का वा़दा किया है लेकिन दुन्या के कुछ लोगों ने बा़ज़ बुरे अख़्लाक़ को बुरा न समझ कर धोखा खाया है जिससे समाज जानवरों (पशुओं) की सतह पर आ गया है। आज कल तरक़्क़ी याफ़्ता मुमालिक, अमरीका व योरोप जैसे देशों में रज़ामन्दी के साथ जिन्सी आज़ादी को अच्छे अख़्लाक के ख़िलाफ़ नहीं समझा जाता है जब कि एशियाई धर्मों में इसे बहुत ही बुरा समझ गया है और इस्लाम ने तो इस के क़रीब जाने से भी रोका है। इसको बहुत बुरा बताया, नाजाइज़ (अवैध) जिन्सी तअ़ल्लुक़ जिसे उर्दू में ज़िना कहते हैं, समाज से इस ला़नत को दूर करने का इस्लाम ने बेहतरीन इन्तिज़ाम किया। इस्लाम में पर्दा फ़र्ज़ हुआ जिस का एक बड़ा मक़्सद ज़िना में रूकावट डालना भी है अमरदों से और औ़रतों से गाना सुनना, नाच गाने की मह़फिलें जमाना, सनीमा देखना, ना मह़रम औ़रतों से तन्हाई करना यह सब ह़राम है। इन सब ह़राम कामों में जहां फ़रमांबरदारी की जांच है, और दूसरे फ़ाइदे भी हैं वहीं ज़िना से ह़िफ़ाज़त भी है। इस्लाम में ज़ानी

के लिए सख़्त तरीन सज़ा है। दुन्या भर के लोग ज़िना को बुरा समझते हैं, और समाज से इसे ख़त्म करना चाहते हैं लेकिन ज़िना पर उभारने वाली चीज़ों पर कोई पाबन्दी नहीं लगाना चाहते। यह तबलों की थाप पर रक़्स, सुरीली आवाज़ के गाने, जवान मर्द औरतों का इख़्तिलात (मेलजोल) यह सब ज़िना पर उभारने वाले साधन हैं। इस्लाम में ज़िना बदतरीन गुनाह है और इस्लामी अख़्लाक में इसे रोकने का जैसा इन्तिज़ाम है कहीं और नज़र नहीं आता। अब कुछ और मुआशरती (सामाजिक) बातों पर ध्यान दीजिए।

इस बारे में क़ुर्आन मजीद का बयान पढ़िये :

"अल्लाह तआला की अ़िबादत करो और उसके साथ किसी को शरीक न करो और भलाई करो अपने मां बाप के साथ और रिश्तेदारों के साथ और यतीमों (अनाथों) के साथ और क़रीब के पड़ोसी और दूर के पड़ोसी, और साथ बैठने वालों, साथ में सफ़र करने वालों, और अपने ग़ुलामों (और आजकल के लिहाज़ से अपने मातहतों) के साथ भी भलाई करो।" (अन्निसा : ३६)

हां इस्लामी अख़्लाक़ में मां बाप को न पूजा जाए गा न उनके कहने से अल्लाह के अ़लावा किसी और को पूजा जाएगा लेकिन उनकी सेवा की जाएगी, उनके साथ भलाई की जायेगी चाहे वह मुस्लिम हों या ग़ेर मुस्लिम उनकी सेवा में कोई कमी न की जायेगी उनके बुढ़ापे में उनको बूढ़ों के सरकारी घर में न भेजा जाएगा बल्कि अपने साथ रख कर हर तरह का आराम पहुंचाया जाएगा। क़ुदरत (सामर्थ्य) के मुताबिक़ खाने, पीने पहनने, दवा अ़िलाज में कोताही न की जाएगी उनकी ख़िदमत से उकता कर उंह कहने की भी इस्लाम में गुंजाइश नहीं। अ़िबादत तो अल्लाह का हक़ है इसलिए मां बाप को सज्दा और डंडवत तो नहीं कर सकते लेकिन इस्लाम ने कहा कि "तुम और तुम्हारा माल तुम्हारे बाप का है।" और बताया कि जन्नत मां के कदमों के नीचे है।

इस आयत में मां,बाप के साथ अच्छे सुलूक की हिदायत के बाद रिश्तदारों के साथ अच्छा सुलूक यानी नेकी करने का हुक्म है। रिश्तदारों का हल्क़ा बहुत फैला हुआ है। पहले क़रीबी रिश्तों को देखना चाहिए जिन का तअ़ल्लुक बिला वास्ता है। जैसे मां, बाप, बीवी (औरत के लिए उसका शौहर) और औलाद। यह बहुत ही क़रीबी रिश्ते हुए, फिर भाई, बहन, चचा, फूफी, दादा, दादी, मामूं, ख़ाला नाना, नानी यह रिश्ते वालिद और वालिदा के वास्ते से हुए, फिर साले, ससुर, सास, ख़ालू, फूफा, दामाद, बहनोई फिर इन सब की औलाद फिर चची, ममानी, भावज वगैरा ग़रज कि इन सभी रिश्ते दारों से अच्छा बरताव जरूरी है। विला वास्ता अ़ज़ीज़ों का तो खाना कपड़ा भी मर्द पर वाजिब (अनिवार्य) है दूसरे अ़ज़ीज़ जिन्हें उस्त्रा कबीरा (बड़ा खान्दान) कह सकते हैं इन से तअ़ल्लुक बनाए रखना उनके सुख, दुख, शादी, ग़मी में शरीक रहना एक दूसरे की मदद करते रहना जिसे सिल–ए–रहिमी कहा जाता है। इस्लामी अख़्लाक़ में इसकी कड़ी ताकीद आई है।

इस क़ुर्आनी आयत में रिश्तों और रिश्तेदारों के बाद यतीमों और मिस्कीनों के साथ नेकी और भलाई का हुक्म है। यतीम वह नाबालिग़ बच्चा या बच्ची है जिस के बाप का इन्तिक़ाल हो गया हो। ग़रीब हो तो उसकी कफ़ालत, देख भाल और मदद पर बड़े वअ़दे हैं। यतीम अगर मालदार हैं तो उसके क़रीबी रिश्तेदारों (औलिया) पर उनकी और उनके माल की हिफ़ाज़त का हुक्म दिया गया। यतीम (अनाथ) की देख रेख करने वाला उसका कफ़ील अगर खुद मालदार है और यतीम भी मालदार है तो उसके माल की हिफ़ाज़त तो करे उसके माल से कुछ खाये उड़ाए नहीं, अपने को उस से पूरी तरह बचाये रखे। यतीम का माल खाने को आग खाना बताया यानी यतीम का माल खाने वाले ने अपने पेट में यतीम का माल पहुंचा कर जहन्नम की आग खाने की सज़ा का मुस्तिहिक़ बना लिया। अल्बत्ता अगर यतीम मालदार है और उसका कफ़ील ख़ुद फ़क़ीर है तो वह उसकी देख भाल के बदले में उसके माल से इहतियात के साथ अपनी ज़रूरतें पूरी कर सकता है फिर जब यतीम बालिग़ हो जाए तो गवाहों के सामने उसका माल उसके हवाले कर दिया जाए।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

क़ुर्आन की शिक्षा

मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी

सुल्ह (सन्धि, मेल)

मोमिन तो आपस में भाई ही हैं तो अपने दोनों भाइयों के बीच सुल्ह (मेल) करा दो। (हुजुरात : १०)

मुसलमानों में अगर झगड़ा हो तो हमारा फ़र्ज़ है कि जो फ़रीक़ ज़ियादती कर रहा हो सब मिल कर उसको सुल्ह पर मजबूर करें और जब वह राज़ी हो जाये तो इन्साफ़ से उन में मेल करा दें।

हमारे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मुसलमानों में बराबर सुल्ह कराया करते थे। एक बार क़बीला बनी अ़म्र बिन औफ़ के कुछ आदमियों के बीच झगड़ा हो गया आपको मालूम हुआ तो चन्द सहाबा के साथ उनमें सुल्ह कराने के लिए तशरीफ़ ले गये।

एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया लोगो। क्या तुम्हें वह बात न बता दूं जो नफ़्ल नमाज़, रोज़े और सदक़े के सवाब से भी बेहतर है? लोगों ने कहा या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) फ़रमाइये। फ़रमाया : मुसलमानों में आपस में सुल्ह करा देने का सवाब सब से अफ़ज़ल है। फ़रमाया दो मुसलमानों में सुल्ह कराने के लिए अगर झूठ भी बोल दिया जाए तो झूठ का गुनाह नहीं होता।

झूठ :

झूठी बात कहने से बचो । (अलहज्ज : ३०)

झूठ बोलना बहुत ही ख़राब बात है इससे बचना चाहिए। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि झूठ गुनाह की तरफ़ ले जाता है और गुनाह दोज़ख में ले जाता है और झूठ बोलते बोलते आदमी ख़ुदा के यहां झूठों में लिख लिया जाता है। हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने झूठ को मुनाफ़िक़ की निशानी बतलाया है फ़रमाया कि मुनाफ़िक़ की तीन पहचानें हैं जब बोले तो झूठ बोले, जब वादा करे पूरा न करे और जब अमीन बनाया जाए तो ख़ियानत करे।

सहाबा (रज़ि०) झूठ नहीं बोलते थे, अगर कोई क़ुसूर हो जाता तो फ़ौरन मान लेते। ग़ज़व–ए–तबूक में बाज़ सहाबा शरीक नहीं हुए थे, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने वजह दर्याफ़्त की तो मुनाफ़िकों ने झूठी सच्ची मअ़ज़िरत कर दी लेकिन हज़रत कअ़ब बिन मालिक ने सच मुच अपनी ग़लती को मान लिया और कहा कि अगर मैं झूठा उज़्र कर दूं तो मुम्किन है कि ख़ुदा आप को मुझ पर नाराज़ कर दे लेकिन अगर सच बोलूं तो मुझ को ख़ुदा से मुआफ़ी की उम्मीद रहेगी। झूठ चाहे ख़ुश गप्पी के लिए बोला जाए या बच्चों को बहलाने के लिए बहर हाल झूठ है लोग आ़म तौर से इस में मुब्तला हैं और इसको बुरा नहीं जानते हालांकि इससे भी बचने का हुक्म है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स लोगों को हंसाने के लिए झूठ बोलता है उस पर अफ़्सोस, उस पर अफ़्सोस।

एक कमसिन सहाबी अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर कहते हैं कि एक बार मेरी मां ने मुझे बुलाया और हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहिव सल्लम) मेरे घर में मौजूद थे मां ने बुलाने के लिए कहा : यहां आ तुझे कुछ दूंगी। हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने दर्याफ़्त फ़रमाया सिर्फ़ कह रही हो या कुछ दोगी? मां ने कहा उसको खजूर दे दूंगी। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया हां, अगर तुम उसको इस वक़्त कुछ न देतीं तो तुम्हारा यह झूठ लिख जाता।

एक मर्तबा एक सहाबीया ख़ातून (रज़ि०) ने दर्याफ़्त किया कि हम में से कोई किसी चीज़ की ख़्वाहिश रखे और फिर कह दे कि मुझे इस की ख़्वाहिश नहीं है तो क्या यह भी झूठ होगा? हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि हर छोटे से छोटा झूठ भी लिखा जाता है।

> ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और सच्चों के साथ रहो।
>
> (अत्तौबा : ११६)

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

आमाल का दार–व–मदार नीयतों पर है

हज़रत उमर इबनुल ख़त्ताब र० से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सुना है– फ़रमाते थे कि तमाम अ़मलों का दार व मदार नीयतों पर है। हर शख़्स को उसकी नीयत के मुताबिक़ मिलेगा; जो अल्लाह और उसके रसूल के लिए हिजरत करेगा तो उसकी हिजरत अल्लाह और उसके रसूल के लिए होगी। और जो दुन्या के हुसूल के लिए करेगा या किसी औरत से निकाह़ के लिए करेगा तो उसकी हिजरत उसी के लिए होगी जिसके लि तर्के–वर्तन किया है। (बुख़ारी, मुस्लिम)

ह़शर अपनी–अपनी नीयतों पर होगा

हज़रत आ़यशा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया एक लश्कर कअ़बे पर ह़म्ला करेगा, जब वह मैदान में आजाएगा। तो उसके अगले पिछले लोग धंसा दियेजायेंगे। मैंने कहा, या रसूलल्लाह, उनके अगले–पिछले लोग कैसे धंसा दिये जायेंगे हालांकि उनमें बाज़ार के लोग होंगे और वह लोग होंगे जो ह़मला करने वालों के शरीक नहीं? आपने फ़रमाया – सब धंसा दिये जायेंगे लेकिन अपनी अपनी नीयतों के मुताबिक़ उठाये जाएंगे (बुख़ारी, मुस्लिम)

नीयत और जिहाद क़ियामत तक बाक़ी रहेंगे :

हज़रत आ़यशा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया – फत्ह़े–मक्का के बा़द (मक्का से) हिजरत नहीं है (इसलिए कि वह दारूल–इस्लाम हो गया है।) मगर नीयत और जिहाद बाक़ी रहेंगे। जब तुमको जिहाद के लिए उठाया जाय तो चल खड़े हो।

नीयत की बिना पर अ़मल की शिर्कत:

हज़रत जाबिर र० बिन अ़ब्दुल्लाः अन्सारी से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ किसी लड़ाई में थे। आप ने फ़रमाया कि कुछ लोग मदीना में रह गये हैं वह तुम्हारे साथ नहीं आये लेकिन अज्र में वह तुम्हारे शरीक हैं। उनको मरज़ ने रोक लिया। (बुख़ारी, मुस्लिम)

माज़ूर, मुजाहिदीन के साथ शरीक हैं :

हज़रत अनस र० से रिवायत है कि हम नबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहिव सल्लम के साथ ग़ज़वए तबूक से पलट रहे थे। आपने फ़रमाया कि कुछ लोग पीछे रह गये। न तुम्हारे साथ चले और न उन्होंने इस सफ़र की कोई घाटी तय की। मगर वह तुम्हारे साथ शरीक हैं। मरज़ ने उनको मजबूर कर लिया।

बेटे को मिल जाने से बाप की ख़ैरात का सवाब नहीं जाता:

हज़रत अबू यज़ीद मअ़न बिन यज़ीद से रिवायत है कि मेरे बाप ने सदक़े के लिए दीनार निकाले और मस्जिद में एक आदमी के पास रख दिये। मैं मस्जिद में आया और मैंने उनको लिया और लेकर घर पलटा। मेरे बाप ने कहा, क़सम ख़ुदा की मैंने तुझे देने का इरादा नहीं किया था। फिर हम दोनों आपस में बह़्स करते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आये। आपने फ़रमाया, ऐ यज़ीद ! तुम्हारी नीयत का तुम्हें अज्र मिलेगा और ऐ मअ़न जो तुमने लिया वह तुम्हारा हो चुका। (बुख़ारी, मुस्लिम)

अल्लाह की ख़ुशी के लिए बीवी को खिलाना भी सवाब व इबादत है:

हज़रत सअ़द र० बिन अबी वक़्क़ास से रिवायत है कि मेरे पास रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मेरी अ़ियादत के लिए हज्जतुल वदाअ़ के साल तशरीफ़ लाये और मैं सख़्त बीमार था। मैंने कहा, या रसूलल्लाह ! आप देख रहे हैं मेरी बीमारी किस ह़द को पहुंच गई है। मैं बहुत मालदार हूं और मेरे एक ही बेटी है। क्या मैं अपने माल का दो तिहाई सदक़ः कर सकता हूं? फ़रमाया–नहीं मैंने कहा; या रसूलल्लाह! निस्फ़? फ़रमाया–नही। मैंने कहा एक तिहाई या रसूलल्लाह? फ़रमाया–हां, तिहाई भी बहुत है। तुम्हारा अपने वारिसों को मालदार छोड़ना उनको मुह़ताज छोड़ने से बेहतर है कि वह लोगों के सामने हाथ फैलाये, और देखो तुम अल्लाह की ख़ुशी के

लिए जो कुछ ख़र्च करोगे अल्लाह की रज़ा चाहते हो तो इसका अज्र तुमको मिलेगा; यहां तक कि जो लुक़्मा अपनी बीवी के मुंह में डालोगे उसका भी सवाब मिलेगा। मैंने कहा, या रसूलल्लाह! क्या मैं अपने साथियों के बाद तक रहूंगा? फ़रमाया, तुम अपनी बक़ीया उम्र में जो अ़मल अल्लाह की रज़ा के लिए करोगो उसके सबब तुम्हारे दर्जे और बलंदी में तरक्की होगी। बहुत मुम्मिकन है कि तुम जिन्दः रहो। बाज़ को तुमसे नफ़ा पहुंचे और बाज़ को नुक़्सान। फिर आपने फ़रमाया – ऐ अल्लाह ! मेरे साथियों के लिए उनकी हिजरत आख़िर तक गुज़ार दे। उनको पलटे पांव न पलटा, लेकिन बेचारे क़ाबिले–रहम तो सअ़द इब्नि खौलः हैं, उनपर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तरस खाते थे, इसलिए कि उन्होंने मक्का में वफ़ात पाई। (बुख़ारी, मुस्लिम)

अल्लाह तआ़ला दिलों को देखता है –

हज़रत अबू हुरैरः र० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया – बेशक अल्लाह तआ़ला न तुम्हारे जिस्मों को देखता है, न तुम्हारी सूरतों को देखता है । उसकी नज़र तुम्हारे दिलों पर रहती है।

जिहाद की नीयत :

हज़रत अबू मूसा अशअ़री र० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से ऐसे आदमी के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया जो बहादुरी के लिए जिहाद करे या हमीयत के लिए या दिखावे के लिए – इसमें अल्लाह के रास्ते में कौन सा है? आपने फ़रमाया – अल्लाह के कलमे का बोलबाला करने के लिए लड़ना ही सिर्फ़ अल्लाह के रास्ते में शुमार होगा। (बुख़ारी, मुस्लिम)

मुसलमान क़ातिल व मक्तूल :

हज़रत अबू बक्र नुफ़ैअ़ बिन अल हारिस अस्सक़फ़ी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब दो मुसलमान अपनी तलवारों के साथ मुक़ाबिल हों तो क़ातिल व मक्तूल दोनों दोज़ख में जाएंगे। मैंने कहा या रसूलल्लाह क़ातिल का मुआ़मला तो समझ में आ गया लेकिन मक़्तूल के बारे में हैरत है आपने फ़रमाया कि वह अपने साथी के क़त्ल पर हरीस था।

जमाअ़त का सवाब क्यों ज़ियादः है

हज़रत अबू हुरैरः र० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया घर पर और दुकान पर नमाज़ पढ़ने से जमाअ़त से नमाज़ पढ़ने का सवाब कुछ ऊपर बीस गुना ज़ियादा मिलता है। जो शख़्स अच्छी तरह वज़ू करे, फिर मस्जिद में आये और नमाज़ ही का इरादा करके घर से निकला हो तो हर क़दम पर उसका दर्जा बलंद किया जायगा और उसकी ख़ताएं दूर की जाएंगी। यहां तक कि मस्जिद में दाख़िल होगा तो नमाज़ में शुमार होगा और जब तक वह मस्जिद में नमाज़ की नीयत से रूका रहता है फ़िरिश्ते उसके हक़ में दुआ़ करते रहते हैं, कहते हैं ऐ अल्लाह ! इस पर रहम कर और इसको बख़्श दे और इसकी तौबः क़ुबूल कर जब तक बा–वज़ू रहे। (बुख़ारी, मुस्लिम)

नेक काम की नीयत ही से सवाब मिल जाता है –

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास से रिवायत है कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं और आं हज़रत अपने रब तबारक व तआ़ला से रिवायत फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने नेकियां और बुराइयां लिखी फिर उनको ज़ाहिर कर दिया कि जिस शख़्स ने नेकी का इरादा किया और उसको न किया तो अल्लाह तआ़ला ने एक नेकी लिखी। और जिसने नेकी का इरादा भी किया और उसको कर गुज़रा तो अल्लाह तआ़ला ने दस नेकियां लिखीं सात सौ गुना तक या उससे भी जियादा और जिसने किसी बुराइ का इरादा किया फिर उसको न किया तो अल्लाह तआ़ला ने एक पूरी नेकी लिखी और अगर वह बुराई अ़मल में आ गई तो एक ही बदी लिखी।

मक्बूल अमल का वसीलः मुसीबत से नजात देता हैः

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर र० से रिवायत है कि मैंन रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फ़रमाते हुए सुना है कि तुमने पहले तीन आदमी (कहीं) रवाना हुए। रास्ते में शाम हो गई। उन्होंने एक ग़ार में पनाह ली। जब उसमें दाख़िल हुए तो एक पत्थर गिर पड़ा और ग़ार का दरवाज़ा बंद हो गया। उन लोगों ने कहा, इस पत्थर से कोई नजात नहीं दे सकता; हां यह कि अल्लाह तआ़ला को अपने किसी अ़मल की याद दिलाते हुए पुकारो। उनमें से एक ने कहा कि ऐ अल्लाह तआ़ला। मेरे मां–बाप बूढ़े थे और मैं उनसे पहले अपने बीवी–बच्चों को दूध नहीं पिलाता था। एक दिन मैं चारे की फ़िक्र में दूर

(शेष पृ. १६ पर)

हिन्दुस्तानी मुसलमान एक नज़र में

मौ० अबुलहसन अली हसनी

मृत्यु के बाद अवश्यभावी विकट समस्या और मुसलमानों की विशिष्ट कार्य पद्धतियां

मनुष्य के जीवन में अन्ततः वह समस्या भी पेश आती है जिससे किसी प्राणी एवं जीवधारी को छुटकारा नहीं, और जिसमें किसी धर्म सम्प्रदाय एवं जाति पांत का कोई भेदभाव नहीं, अर्थात मृत्यु की अवश्यभावी परिस्थिति। ऐसे अवसर पर हिन्दुस्तानी मुसलमानों के घरों में क्या होता है, और उससे सम्बन्धित क्या विशिष्ट पद्धतियां एवं प्राणालियां हैं इनका एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जाता है।

शुभांत की चिन्ता एवं उसकी तैयारी

मुसलमानों को (व्यवहारिक एवं अध्यात्मिक रूप से कोई विशेश तथा महत्वपूर्ण स्थान न रखता हो) अन्त की बड़ी चिन्ता रहती है, अर्थात् उसे मुख्य रूप से इस बात का शोच रहता है कि वह इस संसार से ईमान के साथ विदा हो और उसका अन्त कलम–ए–शहादत, तौहीद एवं रिसालत के अकीदे पर हो। मुस्लिम समाज में, विशेषकर जहां कुछ भी धार्मिक शिक्षा का प्रभाव और पारलौकिक जीवन के प्रति चिन्ता पाई जाती है, यह प्रथा चली आ रही है कि जब कोई मुसलमान किसी मुसलमान से दुआ के लिए निवेदन करता है या उसको किसी पुण्यात्मा के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त होता है, तो वह उससे इस मनोकामना को व्यक्त करता है, कि दुआ कीजिए कि खात्मा बखैर हो या अन्त साधुपूर्ण हो और इसी को एक साधारण मुसलमान सबसे बड़ी सफलता और सबसे बड़ा सौभाग्य समझता है, और उसको मुख काबे की ओर कर देते हैं।

तजहीज़–व तकफ़ीन में सुन्नत का ध्यान

देहान्त के बाद उसे नहलाने की तैयारी और कफन का प्रबन्ध शुरू हो जाता है। कफन में नये, पवित्र तथा सफेद कपड़े का आयोजन किया जाता है। पुरुष के कफन में एक बिना सिला कुर्ता, एक तहबन्द तथा एक ऊपर की चादर होती है, और स्त्रियों के कफन में सिर बन्द अथवा कसावा और सीना बन्द की वृद्धि हो जाती है। गुस्ल (स्नान) का भी एक विशेष ढंग है जिसका विवरण फिक्ह (धर्मशास्त्र) की किताबों में दिया गया है। गुस्ल हर मुसलमान दे सकता है। सदाचारी तथा गुस्ल देने की पद्धति और सुन्नतों का ज्ञान रखने वाले द्वारा नहलाया जाना उत्तम समझा जाता है। ऐसे अवसर पर निकट एवं सगे सम्बन्धी और मित्र जन अपने प्रिय एवं मित्र की अन्तिम सेवा करना अपना सौभाग्य समझते हैं। बहुत स्थानों पर इसके लिए नाई अथवा कुछ जातियों में एक विशिष्ट वर्ग की सेवाएं प्राप्त की जाती हैं, जिनका कार्य ही यह है और व्यावसायिक रूप में यही कार्य करते हैं।

नमाज़े जनाज़ा

जब जनाज़ा तैयार हो जाता है, तो बाहर लाया जाता है, बहुत से लोग अपने इस प्रिय सम्बन्धी, या बिछुड़ने वाले मित्र या महापुरुष के अन्तिम दर्शन करते हैं अब नमाजे जनाजा आरम्भ होती है, जिसमें सम्मिलित होना अति पुण्यात्मक कार्य है। लोगों के धार्मिक संवेगों, रूचियों एवं अभिरूचियों और मरने वाले के सम्बन्धों की व्यापकता एवं अवस्था के अनुसार जनाजे में सम्मिलित होने वालों की संख्या कम अथवा अधिक होती है। यह नमाज भी जमाअत के साथ है, परन्तु इसमें रूकू तथा सजदा नहीं। सब लोग पंक्तियों में खड़े हो जाते हैं, एक तीन, पांच सात अथवा किसी विषम संख्या में पंक्तियां बन जाती हैं, और कोई विद्वान अथवा नेक आदमी या मुहल्ले की मस्जिद का इमाम थोड़ा सा आगे बढ़ कर जनाजे को सामने रख कर उसके सीने की सीध में खड़ा हो जाता है और नमाज आरम्भ हो जाती है। इस नमाज में चार तकबीरें हैं सब कुछ ऐसे स्वर में पढ़ा जाता है कि दूसरे का ध्यान मंद न हो । पहली तकबीर के बार वह दुआ पढ़ी जाती है जिसकी व्याख्या पांचों नमाजों के संदर्भ में आयेगी, दूसरी तकबीर के बाद दरूद शरीफ (जिसका वर्णन पांच वक्त की नमाजों के बारे में सम्बन्धित अध्याय में आयेगा) पढ़ा जाता है। बहुत से विद्वानों तथा मुसलमानों की विभिन्न विचार धाराओं से सम्बद्ध व्यक्ति इस अवसर पर भी सूर–ए–फातिहा का पढ़ना आवश्यक समझते हैं, तीसरी तकबीर के बाद सब मुसलमान (बिना स्वर

निकाले अग्रलिखित अरबी दुआ पढ़ते हैं) :–

अनुवाद : ऐ अल्लाह ! हमारे जिन्दा और मुर्दा, उपस्थित एवं अनुपस्थित, छोटे तथा बड़े और पुरुष तथा स्त्री को क्षमा प्रदान कर । ऐ अल्लाह! हम में से जिसको जीवित रक्खे उसे इस्लाम पर जीवित रख और जिसको तू दुनिया से उठाये उसको ईमान पर उठा।

जनाज़ा यदि किसी नाबालिग़ (अवयस्क) बच्चे या बच्ची का है, तो ऊपर लिखित दुआ के स्थान पर एक दूसरी अरबी दुआ पढ़ी जाती है जिसका अर्थ निम्नांकित है :–

"ऐ अल्लाह इस बच्चे को अगुआ (पेशरौ), हमारे लिए प्रतिदान एवं भण्डार और हमारे लिए कयामत में सिफारिश करने वाला बना और इसकी सिफारिश स्वीकार कर।

चौथी तकबीर के बाद इस्लाम फिर जाता है (अर्थात नमाज़े जनाज़ा समाप्त हो जाती है) और लोग जनाजे को कांधा देते हुए कब्रिस्तान ले जाते हैं। शरीअत में कांधा देने, और मय्यत को उसके अंतिम स्थान (कब्र) तक पहुंचाने, उसको दफन करने तक वहां ठहरने को बहुत महत्व दिया गया है, और इसको अति पुण्यात्मक कार्य बताया गया है। अतः आम तौर पर लोग कांधा देने की कोशिश करते हैं और कब्रिस्तान की दूरी कितनी ही अधिक हो, जनाज़ा मुसलमानों के कांधों पर शीघ्र ही अधिक हो, मौसम कितना ही कब्रिस्तान पहुंच जाता है। अब वर्तमान नागरिक जीवन एवं संस्कृति में कुछ बड़े बड़े नगरों में जहां साधारणतया कब्रिस्तान बहुत दूर होते हैं, लाश गाड़ी पर जनाजा ले जाने का रिवाज हो चला है। मजबूरी और कब्रिस्तान की दूरी को छोड़कर मसनून (नियमानुसार) तरीका वही है जिसका ऊपर वर्णन किया जा चुका है।

क़ब्र-में रखने का तरीक़ा और मिट्टी देने का नियम

कब्र सामान्यतः पहले से तैयार होती है। जनाजा पहुचने पर कुछ लोग कब्र में उतर ज़ाते हैं और मय्यत को काबे की दिशा में रख देते हैं, फिर उस पर बनगे या तख्ते रखकर ऊपर से मिट्टी डालदेते हैं, जिसे मय्यत को मिट्टी देना कहते हैं। मिट्टी देते समय प्रायः कुरआन मजीद के निम्नलिखित शब्द जबान पर होते हैं–

अनुवाद : हमने तुमको इसी भूमि से पैदा किया और इसी में हम तुमको वापस करेंगे और फिर हम इसी से तुमको दुबारा बाहर निकालेंगे।

जब कब्र तैयार हो जाती है और ऊंट की पीठ के समान बन जाती है, उस समय विशिष्ट सम्बन्ध रखने वाले कुछ देर ठहर कर मय्यत के प्रति खुदा से क्षमा याचना हेतु कुछ कुरआन मजीद पढ़ते हैं, और यह क्रिया सुन्नत है।

शोक ग्रस्त घर के लोगों के लिए निकट सम्बन्धियों की ओर से खाने का प्रबन्ध करना और उनके दुःख के प्रति सहानुभूति प्रकट करना।

जब किसी घर में गमी हो जाती है और किसी का देहान्त हो जाता है तो साधारणतया उस दिन निकट सम्बन्धियों तथा मित्रों के घरों से गमी वाले (शोकग्रस्त) घर के लोगों के लिए और उन सम्बन्धियों के लिए जो उस समय घर में एकत्र हो जाते हैं, खाना आता है। यह रिवाज इसविचारधारा पर आधारित है कि मय्यत वाले घर के लोगों के लिये स्वयं भोजन तैयार करने और उसका प्रबन्ध करने का अवसर नही है। अतः खाने पानी की चिन्ता से मुक्त करना तथा इस कार्य से बेफिक्र करना उचित है। वास्तव में यह एक सुन्नत है जो अभी तक इस्लामी समाज में चली आ रही है। मय्यत की हैसियत तथा उसके सम्बन्धों के अनुसार तीन वक्त या तीन दिन, नातेदारों तथा मित्रों के यहां से पका पकाया खाना आता है, और सब मिलकर खाते हैं।

सवाब पहुंचाने की प्रचलित प्रणालियां तथा उनमें भारतीय विचारधारा

हिन्दुस्तान में मय्यत को सवाब पहुंचाने तथा मय्यत के खानों के कई ऐसे तरीके प्रचलित हैं, जो दूसरे इस्लामी देशों तथा इस्लाम के केन्द्र (अर्थात अरब) में नहीं पाये जाते, और उनके बारे में कदाचित् यहां के मुसलमानों ने भारत की प्राचीन प्रचलित परम्पराओं एवं पद्धतियों का अनुकरण किया है, और वह यहां के रीति–रिवाजों से प्रभावित हुए हैं। यथा–तीजा, चालिसवां, कुल आदि जिनमें निर्धारित तिथियों तथा विशिष्ट कायदे कानून तथा अनेक रस्मों की पाबन्दी की जाती है। धार्मिक महापुरूषों के उर्स की विचारधारा भी हिन्दुस्तानी है। इस शब्द (अर्थात, उर्स) से भी (जिसका अर्थ शादी है) दूसरे देशों के मुसलमान अनभिज्ञ हैं। सामान्य रूप से किसी बुजुर्ग (धार्मिक महान भाव) की जन्म तिथि अथवा बरसी के अवसर पर बुजुर्ग से श्रद्धा रखने वाले एवं तीर्थ यानी दूर–दूर से आकर एकत्र होते हैं, कुर्आन मजीद का पाठ करते हैं, उनके नाम का लंगर किया जाता है और धनी तथा निर्धन सब खाते हैं। दूसरे देशों में यदि ऐसी कोई रस्म करने और उनको सवाब पहुंचाने के लिए अदा की जाती है तो उसको उर्स नहीं कहते, दूसरे नामों से याद करते हैं।

तुमकुर (बंगलौर) के समाज सुधार जलसे में

नाज़िम नदवतुल उलमा मौलाना मुहम्मद राबे हसनी नदवी का एक महत्वपूर्ण संबोधन

(दूसरी किस्त)

आखिरत वह चीज है जिसके तसव्वुर (अनुध्यान) से आदमी अपनी जिन्दगी को बेहतर बनाता है जब इनसान को यह मालूम होता है कि हमारे आमाल (कामों) का हिसाब होगा, कियामत (प्रलय) में हमें अपने अअ़माल का हिसाब देना पड़ेगा, हम दूसरी ज़िन्दगी में अल्लाह तआ़ला के हुजूर में हाजिर होंगे और हमसे पूछा जाएगा कि तुमने कैसे कमाया था? और कैसे खर्च किया था? एक हदीस में आता है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया (अनुवाद), (कियामत के रोज) किसी बन्दे के कदम अपनी जगह से उस वक्त तक नहीं हिलेंगे जब तक कि उससे यह सवालात न कर लिये जाएं कि अपनी उम्र (आयु) किस काम में खपाई माल कहां से कमाया और कहा खर्च किया? और जिस्म (शरीर) को किन कामों में घुलाया और बूढ़ा किया। (तिरमिजी) वहां यह सवाल होगा और हमको उस सवाल का जवाब देना होगा तो उस वक्त पता चलेगा कि हमारा अन्जाम (परिणाम) क्या होना है? साफ़ साफ़ कुरआन में आया है कि जो अच्छे अमल (काम) करेंगे उनको आखिरत में जन्नत नसीब होगी, उनको अल्लाह तबारक व तआला की तरफ से नेअमत (मजेदार चीजें) नसीब होंगी और जो अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल०) की नाफरमानी (अवज्ञा) करेगा तो उसको वहां सजा होगी, अजाब होगा, अनुवाद : जो शख्स नेकी लावेगा सो उस शख्स को उस से बेहतर अज्र (बदला) मिलेगा, और वह लोग बड़ी घबराहट से उस रोज अम्न (शान्ति) में रहेंगे, और जो शख्स बदी लावेगा तो वह लोग औंधे मुंह आग में डाल दिये जावेंगे (और उनसे कहा जावेगा कि) तुमको उन्हीं कामों की सजा दी जा रही है जो तुम (दुनिया में) किया करते थे। (सूरः नम्ल, ८०–९०)

जब आदमी इसका तसव्वुर (अनुध्यान) करता है कि मौत सच है, किसी को यह मालूम नहीं कि कब उसकी मौत आ जाएगी? हमारी यह जिन्दगी महदूद (सीमित) जिन्दगी है, चालीस साल पचास साल, साठ साल, सत्तर साल, अस्सी साल, बस यही जिन्दगियां हो रही हैं, इसमें हम कितना ही ऐश कर लें, कितनी ही मजेदार जिन्दगी गुजार लें लेकिन यह एक महदूद मुद्दत (सीमित समय) है मामूली मुद्दत (थोड़ा समय) है, आखिरत (परलोक) में हमको जो जिन्दगी अता (प्रदान) होने वाली है वह न खत्म होने वाली जिन्दगी है हजारों लाखों करोड़ों साल तक चलने वाली जिन्दगी है, तो चन्द (थोड़े) साल के आराम के लिए, चन्द साल तक अपनी ख्वाहिश (इच्छा) पर अमल करने की वजह से हम लाखों साल और करोड़ों साल की जिन्दगी को बरबाद कर लें और वहां अपने लिये मुसीबत खड़ी कर लें, यह कौन सी समझदारी की बात है? अगर हम इस बात का जाइजा (परीक्षण) लें और इस बात को गौर से सोचें कि आखिरत में हमको क्या जवाब देना है? अपने आमाल का हिसाब हमको आखिरत में देना है, हम आखिरत का तसव्वुर (अनुध्यान) करें और वहां के सवाब व अजाब को अपने सामने रखें तो हमारी जिन्दगी खुद बखुद दुरुस्त हो जाएगी।

सहाबा किराम (रज़ि०) (नबी करीम स०अ० के साथी) का यह हाल था कि वह आखिरत से हर वक्त डरते रहते थे और यह कि मरने के बाद क्या होगा? इससे खौफ खाते रहते थे, और जब तक आखिरत में अजाब सवाब का खयाल न हो, अगर इसका एहसास न हो तो जाहिर (विदित) है इन्सान मनमानी जिन्दगी गुजारेगा और मनमानी जिन्दी की कोई सीमा नहीं है वह जानवरों की जिन्दगी की तरह है, जो मनमानी जिन्दगी गुजारते हैं, उनको किसी के हुकूक (अधिकार) का खयाल नहीं उनको अपने ऊपर कोई जिम्मेदारी महसूस नहीं होती, इसलिए कि वह इज्तिमाई (सामूहिक) और सामाजिक जिन्दगी नहीं गुजारते उनको समाज के हुकूक (अधिकारों) का कोई अन्दाजा (अनुमान) नही, लेकिन जहां तक इन्सान का संबंध है तो इन्सान पर उसके बाप का हक़ होता है, मां का हक़ होता है, बहन भाइयों का हक़ होता है, बीवी का हक होता है, अपने पड़ोसी का हक होता हे, अपने साथी का हक़ होता है, और सबके हुकूक (अधिकार) अल्लाह तआला ने बताए हैं।

अल्लाह के रसूल (सल्ल्ल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अल्लाह तआला की तरफ से सारे हुकूक (अधिकार) बताए हैं कि किसका क्या हक है? और उन हुकूक की अदाएगी सिर्फ इसी जिन्दगी में नही बल्कि मरने के बाद की जिन्दगी में भी उनकी अदाएगी होती है। आदमी जो माल छोड़ के जाता है, जाएदाद छोड़ जाता है, उस जाएदाद की तकसीम (बटवारे) के अल्लाह तआला ने कुछ हुदूद और हुकूक (सीमाएं एवं अधिकार) नियुक्त किये हैं। और जाहिर (विदित) है कि अगर हम उन हुकूक को अदा करेंगे और अपनी जिम्मेदारी को पूरा करेंगे, उस तरीके (ढंग) से जो तरीका अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बताया है तो उसका फाएदा हमें आखिरत में हासिल होगा, फाएदा उस जिन्दगी में होगा जो करोड़ों अरबों साल की जिन्दगी है, न खत्म होने वाली जिन्दगी है, उसमें हमको फाएदा हासिल होगा, और अगर हम इन हुकूक को पूरा नहीं करते बल्कि नुकसान पहुंचाते हैं, अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशों को अनदेखा करते हैं तो उसकी सजा वहां भुगतनी पड़ेगी यह हिसाब लगाने की बात है जैसे व्यापारी हिसाब लगाता है कि उसकी आय कितनी हुई और खर्च (व्यय) कितना हुआ है ? व्यापारी शाम को हिसाब लगाता है या महीने में हिसाब लगाता है, इसी तरह एक मुसलमान को रोजाना यह हिसाब लगाना चाहिए कि आखिरत में वह किस तरह अपने कामों का हिसाब देगा? अगर आखिरत (परलोक) का तसव्वुर (विचार) हम में पैदा हो जाए अल्लाह और उसके रसूल (स०अ०) के आदेश की अहमियत (महत्व) समझने लगे तो हमारा समाज भी ठीक हो जाएगा, और खुद (स्वयं) हमारे जाती अखलाक भी ठीक हो जाएंगे, सबसे बड़ी कमजोरी जो इस वक्त हमारे समाज में और हमारी जिन्दगियों में आ गई है वह यह है कि आखिरत का तसव्वुर (विचार) हममें बिल्कुल धीमा पड़ गया है, आदमी सोचता ही नही कि मरने के बाद किस तरह हमको हिसाब देना है? मरने के बाद हमको किस चीज से साबिका (संपर्क) पड़ना है? इसको वह सोचता ही नहीं।

सबसे बड़ी जरूरत इस बात की है कि हम अल्लाह और उसके रसूल स०अ० के अहकाम (आदेश) और उसके नतीजे (परिणाम) को अपने सामने लाएं कि इसका क्या नतीजा (परिणाम) होने वाला है? और यह नतीज़ा कब होगा? आज आंखेंबन्द हो जाए तो आज नतीजा शुरू (प्रारम्भ) हो जाए, जिस वक्त आदमी की आंख बन्द होगी और वह इस दुनिया से रुखसत होगा उसके सामने वह मनजर (दृष्टि) आजाएगा कि जो कुछ उसने जिन्दगी में किया है जो उसने किसी का हक मारा है, जो उसने अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल०) के हुक्म (आदेश) की मुखालिफत की और उसके अनुकूल काम नहीं किया, वह वहां तुरन्त उसके सामने आ जाएगा, मालूम हो जाएगा कि हम दुन्या में क्या करके आए हैं और अब उसकी कोई तलाफी (पूर्ति) नहीं हो सकती वहां तलाफी (क्षतिपूर्ति) की कोई सूरत (उपाय) ही नहीं है वहां तो साफ साफ यह है कि अगर किसी की रकम मार दी है तो कहा जाएगा कि रकम अदा करो, रकम मौजूद नहीं है तो हम क्या अदा करें? कहा जाएगा कि उसके गुनाह इसके सर डाल दो और इसकी नेकियां लेकर उस शख्स को दे दो जिसका हक इसने मारा है। और यहां कुछ खैर (भलाई) का काम किया है कुछ अच्छा काम किया है तो वह सब हाथ से निकल जाएगा, और दूसरे को दे दिया जाएगा, इसलिए कि वहां सिर्फ आमाल (अच्छे काम) का सिक्का चलेगा यह पैसे वैसे का सिक्का नही चलेगा, किसी के पैसे मार दिये हैं उसकी मर्जी के खिलाफ उससे पैसे ले लिये हैं या उसका हक था नहीं दिया है तो कियामत में अल्लाह तआला की तरफ से हुक्म होगा कि उनके हक अदा करो, वह शख्स कहेगा : परवरदिगार (पालनहार) ! कहां से उनका हक अदा करें? हुक्म होगा कि इसके आमाल लेकर उनके सुपुर्द (हस्तांतरित) करो, उसने जो अच्छे काम किये हैं उससे लेकर उस शख्स को दे दो जिसका हक उसने मारा है,और अगर उसके पास अच्छे आमाल नहीं हैं तो बुरे आमाल लेकर उसके सर डाल दो, हदीस में आता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया : अनुवाद जिसने जुल्म करके अपने भाई की आबरू (इज्जत) लूटी हो या और कोई चीज ली हो तो उसे चाहिए कि उससे आज ही इस दुन्या में मआफ करा ले, इससे पहले कि वह दिन आए, जहां न दीनार चलेगा न दरहम वहां तो यह होगा कि अगर उसके पास नेक आमाल है। तो उनके जुल्म के बराबर उससे ले लिये जाएंगे, और अगर उसके पास नेकियां नहीं होंगी तो जिसका हक मारा है उसकी

बुराइयां लेकर उस पर लाद दी जाएंगी। (बुखारी)

एक दूसरी हदीस में ऐसे शख्स को जिसकी नेकियां दूसरे को दिलाई जाएंगी या दूसरों के गुनाह उस पर लादे जाएंगे, मुफलिस कहा गया है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद गिरामी (आदर्णीय वर्णन) है : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा से पूछा : जानते हो मुफलिस कौन है? सहाबा ने अर्ज किया हम में मुफलिस वह शुमार होता है जिसके पास दरहम, दीनार,माल और अस्बाब न हो, आप सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने इरशाद फरमाया : नहीं, बल्कि मेरी उम्मत में मुफलिस (निर्धन) वह शख्स है जो कियामत में नमाज, रोजा और जकात लेकर हाजिर होगा लेकिन इसी के साथ साथ उसने दुनिया में किसी को गाली दी होगी, किसी पर बुहतान (आरोप) लगाया होगा, किसी का माल खाया होगा, किसी का खून बहाया होगा, और किसी को (बिला वजह) मारा होगा तो उसकी नेकियां लेकर उन लोगों को देदी जाएंगी और अगर दूसरों को हिसाब चुकाने से पहले उसकी नेकियां खत्म हो जाएंगी तो उसके गुनाह लेकर इस पर लाद दिये जाएंगे और फिर इसे जहन्नम में फेंक दिया जाएगा, (मुस्लिम शरीफ)

जरा सोचने की बात है कि हम लापरवाही के साथ दूसरों का हक मार देते हैं, दूसरों का हक अदा नहीं करते, अल्लाह ने मां बाप का हक रखा है, भाइयों का हक रखा है, यहां तक कि पड़ोसियों का हक रखा है जोकि अल्लाह तआला ने हक रखे हैं, और फिर लेन देन में, तिजारत (व्यापार) में कारोबार में, न मालूम कितने मौके हैं जहां हुकूक (अधिकार) हम पर वाजिब (जरूरी) होते हैं उन हुकूक को हमें उस तरीके से अदा करना चाहिए जिस तरीके से अल्लाह और उसके रसूल स०अ० का हुक्म है, हम इसकी परवाह नहीं करते, मीरास है, कोई जाएदाद छोड़ कर इस दुन्या से चला गया है, जाएदाद का सही बटवारा नहीं करते, बहन का हिस्सा नही देते, सिर्फ बहन ही का हिस्सा नहीं, आप मीरास के अहकाम (आदेश) देखिये, किसके किसके हिस्से अल्लाह ने मुकर्रर (नियुक्त) किये हैं, जिस वक्त इन्सान का इन्तिकाल (देहान्त) होता है तो उसकी मिल्कियत (स्वामित्व) में जो जाएदाद और माल होता है वह खुद बखुद (स्वयं) उन लोगों का हो जाता है जिसके हुकूक अल्लाह तआला ने मुकर्रर (नियुक्त) किये हैं, अब अगर उनको आदमी नहीं अदा करता तो गोया कि वह हराम माल लिये बैठा है जो खा रहा है वह हराम है वह हलाल नहीं है, और यह हक जो उसने मारा है कियामत में उससे दिलवाया जाएगा, जहां उसके पास पैसे नहीं होंगे, माल नहीं होगा, तो क्या देगा? अपने अअमाल देने पड़ेंगे उसने जो नमाजें पढ़ी हैं वह नमाजें दे देनी पड़ेगी और यह बेनमाजी हो जाएगा, जो नमाज पढ़ी थी दूसरे के हक में चली गई पैसे दे नहीं सकते तो जिसका हक मारा था उसके बदले नमाजें दे दी जाएगीं, आप नमाज पढ़कर गए लेकिन मालूम हुआ कि वह बेनमाजी हो गए, इसलिए कि नमाज वहां छिन जाएगी और यही मुआमला (व्यवहार) उसके रोजों और खैर खैरात के कामों के साथ भी होगा।

दूसरों के हुकूक अदा करना बहुत ही जरूरी है,सोचना चाहिए कि आंख बन्द होने के बाद हमारे साथ क्या मुआमला होगा? आखिरत किस वक्त शुरू होगी आखिरत आंख बन्द होते ही फौरन शुरू हो जाती है, यह जिन्दगी कै रोज की है? जिसके लिए हम दूसरों के हुकूक बरबाद करते हैं।

हम अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अहकाम (आदेशों) की नाफरमानी करते हैं क्या थोड़े दिनों की जिन्दगी के लिए? चार रोज के लिए ? चाररोज की जिन्दगी की खुवाहिश के लिए? हम आखिरत को तबाहकर रहे हैं, आखिरत में हम क्या जवाब देंगे? हम जो थोड़े बहुत अच्छे अमल लेकर जाएंगे, वह भी हम से छिन जाएंगे, यह कोई अच्छा सौदा है? जिस वक्त यह बात सामने आएगी उस वक्त कोई तकलीफ (क्षतिपूर्ति) की सूरत नहीं होगी, वहां कोई कुछ भी नहीं कर सकता सिवाए इसके कि अपने अच्छे आमाल से महरूम (वंचित) हो जाए, दूसरो कें बुरे आमाल उस पर लद जाएं, वहां पर या तो जन्नत है या जहन्नम है, जन्नत के बागात, नहरें वहां की राहतें और नेअमतें सब एक तरफ दूसरी तरफ जहन्नम की आग, और तकलीफ परेशानियां, दोनों का हिसाब हमें लगाना चाहिए यह आसान बात नहीं है जो हम बहुत बेपरवाही के साथ अल्लाह तआला के अहकाम (आदेश) को और उसके रसूल सल्ल० के अहकाम को अनदेखा कर देते हैं। जिस वक्त इसका हिसाब लिया जाएगा उसवक्त रोने और अफसोस करने के अलावा और कोई सूरत नहीं होगी।

(रूपान्तर गुफरान नदवी)

खुदा की हस्ती

मौ० महम्मद मंजूर नोमानी

दीन–व–मजहब के सिलसिले की बुन्याद इस हकीकत के मानने पर कायम होती है कि –हमारा और सारी दुन्या का कोई पैदा करने वाला है और वही अपनी कुदरत और हुक्म से इस सारे संसार को चला रहा है। अगर कोई आदमी इस बुन्याद ही को न माने तो उसके नजदीक दीनों–धर्म के सिलसिले की तमाम बातें बेवकूफ इन्सानों की धारणायें हैं।

बहरहाल खुदा की हस्ती का मानना दीनो–धर्म की पहली बुन्यादी बात है। कोई दीनी दावत (धार्मिक आमंत्रण) उन्हीं लोगों को दी जा सकती है जो पहले इस आधार पर बुन्याद को मान लें। और यह हकीकत है कि खुदा की हस्ती (अस्तित्व) की जानकारी खुद अपनी जात की जानकारी की तरह बिल्कुल फितरी (प्राकृतिक) और जाहिर बात है, जिस के लिए किसी दलील और सुबूत की जरूरत नहीं और इसी लिये दुन्या की आम इन्सानी आबादी हमेशा से ही इस बुन्याद की मानने वाली रही है। यहां तक कि हमारे इस युग में भी जिस को लादीनियत (निर्धमियता) और दहरियत(नास्तिकता) का युग कहा जाता है – इन्सानों की एक बड़ी भारी संख्या खुदा की हस्ती को मानने वाली है। इसीलिए "कुरआन–मजीद" ने अपनी दावत (आमंत्रण) के सिलसिले में इस मसअले (तथ्य) पर प्रत्यक्ष रूप से ज्यादा बहस और चर्चा नहीं की है। फिर भी जगह–जगह उसने इशारों ही इशारों में इस मसअले पर ऐसी दलीलें और सुबूत कायम किये हैं, जो हर उस आदमी के दिल में खुदा की हस्ती का यकीन पैदा करने के लिए बिल्कुल काफी हैं जिसकी समझ बूझ की शक्ति सही हो और जिसने अपनी अक्ल और समझ की आंखों को फोड़ न लिया हो।

हां! इस सिलसिले में यह एक बात पहले समझ लेने की है कि कुरआने–पाक खुदा की हस्ती (एवं आस्था सम्बन्धी अन्य मान्यताओं) को मनवाने के लिए फलसफियों (तर्क–शास्त्रियों) की तरह बहस और मुनाजरा नहीं करता। क्योंकि मुकाबले में सामने वाला लाजवाब (उत्तरहीन) तो हो जाता है लेकिन उसके दिल में यकीन (विश्वास) की ठंडक पैदा नही हो सकती। इसीलिए कुरआन–पाक का तरीका यह है कि वह इन्सानों की सही और उचित फितरत से अपील करता है कि इस सारे संसार का इन्तिजाम जिस को तुम अपनी आखों से देख रहे हो बल्कि तुम खुद उसी का एक हिस्सा हो, इसमें जरा गौरो–फिक्र (विचार) करो तुम खुद हकीकत को पालोगे और जो तुम को बतलाया जा रहा है और उसकी खुली निशानियां खुद अपनी आंखों से देख लोगे, और तुम्हारा यह गौर–व–फिक्र और मुतालआ (अध्ययन) ही यकीन और इतमीनान (विश्वास एवं संतोष) की ठंडक तुम्हारे दिलों में पैदा कर देगा। इस तमहीद (प्रस्तावना) को ध्यान में रख कर जरा पढ़िये कुरआने–मजीद की यह आयतें।

अनुवाद : बिला शुब्ह (निस्संदेह) आस्मान और जमीन के रचने में और रात–व–दिन के एक के पीछे एक के आने में और उन जहाजों में जो इन्सानों के काम की चीजें लेकर नदियों और समुद्रों में चलते फिरते हैं, और उस बारिश में जिसे अल्लाह, आसमान से बरसाता है फिर उससे जमीन को एक जिन्दगी देता है, इस के बाद कि वह मुर्दा हो चुकी होती है इसी के जरिये हर तरह के जानदार जमीन की वुसअत (विशालता) में फैला देता है, ओर हवाओं के बदलने में, और उन बादलों में जो आसमान व जमीन के बीच मुसख्खर (आज्ञाकारी) रहते हैं (तो इनसब चीजों में जिन को सब आंखों वाले इन्सान अपनी आंखों से देखते हैं) अक्ल से काम लेने वालों के लिये खुली निशानियां हैं।

कुरआने मजीद ने यहां आसमान व जमीन की बनावट, रात–दिन का मुकर्ररा निजाम समुद्रों में जहाजों की चलत–फिरत, बारिश और उसके नतीजे, हवाओं में तबदीलियां (परिवर्तन) और आस्मान और जमीन के बीच एक खास निजाम (अनुशासन) के अन्तर्गत रहने वाले बादलों की तरफ इशारा करके इन्सानों से कहा है कि इन चीजों में गौर करो। अगर तुम सही समझ से काम लोगे तो इन में की हर एक चीज तुम्हें साफ–साफ बतायेगी कि वह जो कुछ है जिस हाल में है आप से आप नहीं बनी है बल्कि किसी हिकमत व खबर रखने वाली और पूरी–पूरी ताकत

व कुदरत रखने वाली हस्ती ने उसे ऐसा बना दिया है– फिर सूरः अनआम में इरशाद है –

अनुवाद : बेशक अल्लाह है दाने और गुठली का फाड़ने वाला, वह जिन्दा को मुर्दे से निकालता है और मुर्दे को जिन्दा से निकालने वाला है यह सब कुछ करने वाला अल्लाह ही है, फिर तुम किधर भटके चले जा रहे हो?

कुरआन कहता है कि तुम देखते हो किसी अनाज के एक दाने या किसी फल की गुठली को, कि वह जमीन में दफन कर दिया जाता है। न उस दाने या गुठली में कोई शऊर व एहसास (चेतना–बोध) है न जमीन में और न उनमें से किसी में इरादे ही की कोई ताकत है। यह सब चीजें बिल्कुल बेजान हैं। लेकिन कुछ दिनों के बाद, किसी नजर न आने वाली ताकत का छिपा हाथ जमीन के अन्दर ही अन्दर उस दाने और गुठली को फाड़ता है और उसमें से निहायत (अत्यन्त) नर्म–व–नाजुक (कोमल) एक अखुवा निकलता है, फिर वह अपने ऊपर वाली मिट्टी की परतों को चीरता हुआ ऊपर निकल आता है। तो जरा सोचो कि मिट्ठी में दफन इस बेजान दाने या गुठली को किस ने फाड़ा? किसने उसमें से वह जानदार अखवा निकाला? फिर सूत के धागे जैसा नर्म–व–नाजुक (कोमल) इस अखवे ने किस की ताकत से जमीन को चीर डाला क्या तुम्हारी अक्ल में यह आ सकता है कि इस बेजान दाने या गुठली ने यह सारे काम खुद कर लिये, या बिना किसी करनेवाले के आप से आप यह सब कुछ हो गया। कभी नहीं! यह सब कुछ एक हिक्मत और कुदरत वाली (सर्वज्ञानी एवं सर्वशक्तिशाली) हस्ती ने किया और वह हस्ती खुदा की हस्ती है।

और उसकी कुदरत सिर्फ बेजान दाने और गुठली ही के साथ यह अमल नही करती बल्कि और भी कितनी बेजान चीजों से वह जानदार चीजें पैदा करता है। और इसी तरह कितनी ही जानदार चीजों से बेजान चीजों को निकालता है– और तुम यह सब देखते हो। उदाहरण के लिए बेजान अंडों से जानदार बच्चों को निकलना भी देखतेहो और जानदारों में से बेजान चीजों को भी निकलते देखते हो। खुदा की कुदरत की यह कैसी खुली–खुली निशानियां तुम्हारे सामने हैं। फिर तुम्हें क्या हो गया है? तुम क्यों और किधर भटक रहे हो। और सूरए रअद में इर्शाद है –

अनुवाद : और देखो जमीन में अनेक टुकड़े हैं जो एक दूसरे से मिले हुए हैं और पास–पास हैं। और अंगूर के बाग हैं और अनाज के खेत हैं और खजूर के पेड़ हैं। इनमें से कुछ ऐसे हैं जो जड़ से दूसरे पेड़ के साथ जुड़े होते हैं और कुछ ऐसे होते हैं जो इस प्रकार जुड़े नहीं होते। इन सब चीजों को एक ही पानी से सींचा जाता है, और फिर इनमें से किसी को किसी पर हम मजे (स्वाद) में बढ़िया बना देते हैं। इन सब में बड़ी निशानियां हैं अक्ल से काम लेने वालों के लिए।

कुरआन कहता है, धरती जिस पर तुम चलते हो और जिस से तुम्हारी गिजा (जीविका) पैदा होती है, जरा इस की उस हालत पर तो गौर करो कि उस के एक दूसरे से मिले हुए टुकड़ों में कैसा कैसा फर्क होता है। एक ज्यादा फसल वाला है, दूसरा कम फसल वाला। एक गेहूं पैदा करने के लिए ज्यादा मुनासिब है और दूसरा कपास या ईख पैदा करने के लिए। फिर किसी टुकड़े में अंगूर की बेलें हैं और उन से अंगूर उतरते हैं, और इसी के बराबर वाले दूसरे टुकड़े में अनाज का खेत है जिस में से अनाज पैदा होता है, और साथ ही साथ तीसरे टुकड़े में खजूर के पेड़ है, और वे भी सब समान नहीं बल्कि भिन्न–भिन्न प्रकार के हैं। अलग–अलग एक ही तन वाले भी हैं और एक हीं जड़ से निकले हुए कई–कई जुड़े हुए भी हैं। फिर हाल यह है कि सब को एक पानी मिलता है, एक ही हवा लगती है, एक ही सूरज की किरनें सब पर पड़ती हैं। फिर भी उन की जाहिरी (प्रत्यक्ष) शक्लों–सूरत के अलावा उन के स्वाद में भी कितना फर्क है। क्या यह फर्क,यह छोटा– बड़ा होना, और यह ऊंच–नीच आप से आप है? किसी इरादे और कुदरत के अमल के बगैर यूं ही आप से आप हो रहा है? कभी नही। जमीन के टुकड़ों के इस कैफियाती (गुणात्मक) फर्क व इख्तिलाफ (विभिन्नता) में और इसकी पैदावार की इस रंगा–रंगी में सूझ–बूझ से काम लेने वालों के लिए खुले चिन्ह मौजूद हैं, जिन से वे असल हकीकत के बारे में यकीन (विश्वास) हासिल कर सकते हैं, और जिसकी कुदरत–व–हिकमत (असीम) शक्ति और ज्ञान से यह सब कुछ हो रहा है, उसको जान सकते हैं। और सूरए अबस में इर्शाद है :

अनुवाद : इन्सान ज़रा अपनी गिजा पर नजर डाले और उसमें गौर करे, हम पहले जमीन पर पानी बरसाते हैं फिर उस जमीन की सतह को शक

करते हैं (फाड़ते हैं) फिर हम इसमें अनाज, अंगूर तरकारियां जैतून, खजूर के वृक्ष और गुनजान बाग तथा फल और जानवरों के लिए घास पैदा करते हैं।

अतः हमारी पैदा की हुई इन गिजाओं (आहार) को इस्तेमाल करने वाले इन्सान को चाहिए कि वह सोचे कि वह अनाज जिससे तैयार की हुई रोटी में खाता हूं, और यह तरकारियां और यह तरह–तरह के फल, और हमारे जानवरों के काम आने वाली यह घास, यह सब चीजें कहां से आती हैं और कौन इन को पैदा करता है। जिस पानी से यह सब चीजें पैदा होती हैं उसे कौन बरसाता है। और फिर किस के हुक्म और किस की कुदरत से जमीन के अन्दर दबे हुए दानों और गुठलियों से उन चीजों के पौधे उगते हैं। और बिल्कुल शुरू में जमीन में से इन पौदों के निकलने के लिए कौन जमीन की सतह को इनके लिए चीर देता है–तो इन्सान अगर हकीकत का तालिब (वास्तविकता का तलबगार) बन कर अपनी गिजा ही पर गौर करेगा तो वह हकीकत को पालेगा। और गिजा के खालिक (पैदा करनेवाले) का और उस की कुदरत व हिक्मत (असीम शक्ति और ज्ञान) का उस को ज्ञान प्राप्त हो जायेगा। और सूरए नह्ल में इर्शाद है:

अनुवाद : और तुम्हारे जानवरों में भी गौर–व–अिबरत (नसीहत) का सामान है, हम तुम को उन के पेट में से खून और गंदे फुज्ले (विष्ठा) के बीच से पाक साफ दूध पिलाते हैं, जो पीने वालों के लिए बड़ा मजेदार होता है।

कुरआन कहता है कि जिन जानवरों का तुम दूध पीते हो जरा उनही में तुम गौर करो। उनके पेट में खून की नालियां हैं। गंदे फुज्ले के रहने की जगह और उस के रास्ते हैं, और कोई पल ऐसा नहीं होता कि इन मवेशियों के बदन में सुर्ख नापाक खून और बदबूदार गलीज फुज्ले (गन्दी विष्ठा) की काफी मिकदार (मात्रा) भरी न रहती हो। लेकिन इन जानवरों के बदन के जिन हिस्सों में खून और गंदगी भरी रहती है, उसी के करीब से लतीफ (शुद्ध) और साफ दूध निकलता है। जिस में न खून के रंग की कोई झलक होती है और न गलीज फुज्ले की बदबू का कोई असर। वह पीनेवालों के लिए कितना मजेदार, स्वादिष्ट और स्वच्छ होता है, तुम खुद इस को जानते हो! तो जरा सोचो कि यह किसकी कारीगरी है। क्या जिस गाय या भैंस में से यह दूध निकलता है, यह उस का काम है? क्या किसी इन्सानी अक्ल ने दूध की यह विचित्र जिन्दा मशीन बनाई है? नहीं, कभी नही। यह सिर्फ उस हकीम (ज्ञानी) और खबीर (खबर रखने वाली) हस्ती की कुदरत का करिश्मा है जिसने इस सारी धरती को और तुम को भी पैदा किया है।

और एक मौके पर सवालिया अंदाज (प्रश्न स्वरूप) में खुदा की हस्ती ही के संबंध में बहुत ही थोड़े शब्दों में कितनी बलीग (परिपूर्ण) और कैसी तसल्ली–बख्श (संतोषजनक) बात कही गयी है। इर्शाद है :

अनुवाद : क्या तुम्हें उस अल्लाह की हस्ती में शक है जो तमाम आसमान और जमीन (और उन के अन्र की सारी काइनात) का बनाने वाला है।

इस छोटे से सवालिया जुमले (प्रश्नात्मक वाक्य) के जरिये कुरआने–पाक ने इन्सानों के सोचने के लिए उन के सामने जमीनों आसमान का सारा फैलाव रख दिया है।

आंखों वाला आदमी आसमान को देखता है, चांद सूरज तारों को देखता है। उनकी रोशनी और उनकी गर्मी या ठंडक को देखता है। जमीन को अपने नीचे पाता है, उसमें बागात देखता है। उससे पैदा होने वाला अनाज और फल खाता है। उस के खुश रंग फूल देखता है और उनकी खुशबू सूंघता है। उससे पैदा होने वाली कई चीजों को इस्तेमाल करता है और उनके अजीबो गरीब (अदभुत–विचित्र) खवास (गुणों) से फायदा उठाता है। फिर जब तक कि उसकी अकल बिल्कुल मारी न जाये, वह यह नहीं सोच सकता कि यह सब चीजें खुद अपने इरादे और फैसले से ऐसी बन गयी हैं। वह यह भी नहीं सोच सकता कि किसी फिलासफर (दार्शनिक) या कारीगर आदमी की फिलासफी या कारीगरी के यह सब करिश्मे हैं। उसकी स्वस्थ्य बुद्धि इसके अलावा किसी तौजीह (तर्क) को कबूल ही नहीं कर सकती कि यह सब किसी हकीम–व–खबीर (असीम ज्ञान और शक्ति रखनेवाली) हस्ती की कुदरत व कारीगरी का करिश्मा है। और सूरए जारियात में इर्शाद है –

अनुवाद : और यकीन लानेवालों के लिए जमीन में बहुत सी निशानियां (प्रमाण) मौजूद हैं और खुद तुम्हारे अन्दर भी मौजूद हैं, फिर क्या तुम को दिखलाई नहीं देता।

यहां इन्सानों से कहा गया है कि जमीनो–आसमान में हमारी कुदरत की जो निशानियां हैं, उन के अलावा

खुद तुम्हारे अन्दर हमारी निशानियां मौजूद हैं। तुम अगर अपनी फितरी (प्राकृतिक) बसीरत (सूझ–बूझ) से काम लो तो खुद अपने वजूद (अस्तित्व) और अपने निजामे–जिन्दगी (जीवन–प्रणाली) में गौर कर के यकीन हासिल कर सकते हो।

असल बात यह है कि इन्सान अगर सिर्फ अपने वजूद अपने जिस्म के हिस्सों (अंगों) और अपने निजामे–जिन्दगी ही पर गौर करे तो खुदा की हस्ती के बारे में उसे हरगिज (कदापि) कोई शक–व–शुबा (सन्देह) न रहे वह अपनी शुरूआत को सोचे। मां के पेट में मेरी यह सूरत किसने बनाई? मेरे बदन में यह रूह (आत्मा) कहां से आई? मेरी जिन्दगी के यह सामान किस ने पैदा किये? मेरी आंख में रोशनी किसने डाली ? मेरे कान के पर्दों में आवाज सुनने की काबलीयत (क्षमता) किस ने रख दी? मेरी नाक के गुद्दों (ग्रंथियों) को खुशबू और बदबू का यह एहसास (अनुभव) किसने दिया? मेरी जबान और मेरे तालू में यह चटखारा और मजा किसने रख दिया, जिस से खाने–पीने के सारे लुत्फ (मजे) हैं? और मुझे बोलने की यह ताकत किसने दी? क्या मेरे साथ यह मेहरबानियां (कृपा) मेरी मां ने कीं? क्या मेरे इन कामों के लिए किसी डाक्टर की खिदमात (सेवायें) हासिल की गयीं? क्या मैंने खुद अपने आपको ऐसा बना लिया? जाहिर है कि इनमें से कोई बात भी नहीं है, और यह सोचना तो और भी गलत होगा कि अपने या किसीऔर के इरादे के बगैर ही आप से आप ऐसा बन गया। अतः हकीकत इस के अलावा कुछ नही है कि एक बड़ी हकीम–व–खबीर (असीम ज्ञान और शक्ति रखने वाली) और पूरी–पूरी ताकत–व–कुदरत रखने वाली हस्ती ने मुझे पैदा किया है। और यह सब मेहरबानियां मेरे साथ उसी ने और सिर्फ उसी (अल्लाह) ने की हैं।

(पृष्ठ ४ का शेष)

आगे मिस्कीन के साथ अच्छा सुलूक करने का हुक्म है। मिस्कीन वह है जिस के पास अपना खाना पीना मुहय्या करने भर का भी माल न हो। इस्लाम ने ज़कात सदक़ात और ख़ैरात से उनकी मदद का हुक्म दिया। आगे पड़ोसी के साथ नेकी करने का हुक्म है पड़ोसी के हक़ में अल्लाह की तरफ़ से– इतने अहकामात (आदेश) उतरे कि ख़ुद अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को लगा कि कहीं पड़ोसी वारिस न बना दिया जाए। बताया गया कि जिस की बुराइयों से उसका पड़ोसी महफ़ूज़ (सुरक्षित) नहीं वह मोमिन नहीं। पड़ोसी को हदया (उपहार) भेजो उससे हदया लो। कोई अच्छी चीज़ पकाओ तो पड़ोसी को भी भेजो, अपनी दीवार पर उसे लकड़ी रखने दो, उसकी इज़्ज़त व आब्रू की हिफ़ाज़त करो। अियादत, तअज़ियत और हर क़िस्म की हमदर्दी पड़ोसी का हक है। (बाकी अगली भेंट में)

(पृष्ठ ७ का शेष)

तक चला गया और राह में मुझको शाम हो गई। जब घर पलटा तो उनको सोता पाया। मैंने बुरा समझा कि उनको बे–आराम करूं या उनसे पहले बीवी बच्चों को दूध पिलाऊं। प्याला मेरे हाथ में था और मैं उनके जागने के इन्तिज़ार में रहा, यहां तक कि सुब्ह नमूदार हो गई और बच्चे मेरे पांव पर लोट रहे थे, मैंने पहले वालिद साहब को दूध पिलाया। ऐ अल्लाह! अगर यह काम मैंने तेरी ख़ुशी के लिए किया है तो इस पत्थर को हमसे दूर कर। पस थोड़ा पत्थर हट गया।

दूसरे ने कहा, ऐ अल्लाह तआला! एक लड़की थी। वह मुझको बहुत महबूब थी। एक रिवायत में है कि मैं उसको इतना चाहता था कि जैसे किसी मर्द को औरत से महब्बत हो सकती है। एक दिन मैंने बुलाया, उसने इन्कार किया, यहां तक कि क़हत से परेशान होकर वह मेरे पास आई। मैंने उसको एक सौ बीस दीनार इस शर्त पर दिये कि वह मुझसे तख़्लियः में मिले। वह राज़ी हो गई। जब मैंने इरादा किया तो उसने कहा, अल्लाह से डर। मैं यह सुनकर बाज़ रहा, हालांकि वह मुझे इन्तिहाई महबूब थी। फिर मैंने उससे रूपया भी वापस नहीं लिया ।

ऐ अल्लाह ! अगर मैंने वह काम तेरी रज़ा की ख़्वाहिश में किया है तो हमें इस मुसीबत से रिहाई अता फ़रमा। तो पत्थर खिसक गया मगर इतना ही कि निकल नहीं सके।

तीसरे ने कहा, ऐ अल्लाह ! मैंने कुछ मज़दूर काम के लिए बुलाये और उनको पूरी–पूरी मज़दूरी दी। सिवा एक आदमी के कि वह चला गया था; मैंने उसकी मज़दूरी से तिजारत की। कुछ अर्से में तिजारत ख़ूब नफ़ा लाई। एक दिन वह आया और कहा, अल्लाह के बंदे मेरी मज़दूरी दे। मैंने कहा, यह जितनी चीजें तुम देख रहे हो– ऊंट, गाय, बकरी गुलाम सब तुम्हारे हैं और तुम्हारी मज़दूरी से हैं। कहा, क्यों मुझसे मज़ाक़ करते हो। मैंने कहा, मैं मज़ाक़ नहीं करता, यह हक़ीक़त है; तो वह सब लेकर चला गया। ऐ अल्लाह ! अगर मेरी यह बात तुझे पसंद आई हो तो हमको इस तंगी से नजात अता फरमा। पस वह पत्थर हट गया और सब निकल गये।

हज़रत अली (रज़ि०)

के न्याय की विशेषताएं

डॉ० मुहम्मद इज्तिबा नदवी

हजरत अली (रज़ि०) की तत्व–दर्शिता

हिजाज से बहुत दूर रेगिस्तान में दो नवयुवक सखरह व हुबैरह विभिन्न प्रकार के धोखे देकर यात्रियों और काफिलों को लूट लिया करते थे। वे यह काम इस चतुराई और होशियारी से करते थे कि कानून की पकड़ और हुकूमत के घेरे से भी बच जाते थे। एक दिन दोनों ने आपस में यह तै किया कि वे कब तक इस लूट मार और धोखा धड़ी से काम चलाएंगे कोई ऐसी तदबीर की जाए कि ठाठ बाट का जीवन बसर हो।

सखरह, हुबैरह से कुछ अधिक चालाक व चतुर था। वह नयी नयी तदबीरें सोचने में निपुर्ण था। उसने हुबैरह से कहा कि मैंने एक योजना बनायी है यदि तुम मेरा साथ दो और मेरी योजना पर चलो तो हम निश्चय ही सफलता प्राप्त कर लेंगे और ठाठ बाट का जीवन बसर करेंगे। हुबैरह ने कहाः मैं तो तुम्हारा दोस्त हूं, तुम जो हुक्म दोगे वही करूंगा, मैं इसमें किसी प्रकार की कोताही न करूंगा।

सखरह ने कहा तुम जानते हो कि उम्मे सालिम बलोया एक धनी महिला है बहुत अधिक माल और खजूर के बाग की मालिक है। उस माल से उसकी वार्षिक आय बहुत अधिक होती है। वह बड़ी उदार हृदय वाली, भोली भाली और बेवकूफ भी है। बहुत जल्द मेरे जाल में फंस जाएगी और इसतरह हम उससे बड़ी दौलत ऐंठ लेंगे। वह किसी प्रकार की कानूनी कार्यवाही भी नहीं कर सकेगी। यदि उसने अदालत का दरवाजा खटखटाया भी तो हम उस समय तक उसकी पकड़ से बहुत दूर जा चुके होंगे।

इसके बाद उसने एक थैली निकाली। उसमें सौ दीनार गिने और उनको दूसरी थैली में डाला और फिर अपने साथी हुबैरा से कहा कि मेरे साथ चलो और जो कुछ मैं कहूं उसकी हां में हां मिलाते रहो। यदि तुमने कोई गलती की तो सारी योजना चौपट हो जाएगी। दोनों बदमाश सालिम के घर के सामने खड़े थे, सखरह ने आगे बढ़कर हल्की सी दस्तक दी और अन्दर आने की इजाजत चाही। सखरह ने ऐसा भेस भर रखा था जिससे वह किसी उच्च और शरीफ खानदान का बड़ा व्यक्ति लग रहा था। उसके हाव भाव बातचीत, बोलने का अन्दाज, उठने बैठने के तौर तरीके और रखरखाव से हर कोई धोखा खा सकता था।

उसने उम्मे सालिम से बात की शुरूआत इन शब्दों में की कृपालू मां! हम दोनों शाम से गल्ला मंगाते हैं और उसे बेच देते हैं। व्यापार में हम दोनों बराबर के साझी हैं, हमें इसबार सौ दीनार का नफा हुआ है। हमने सोचा कि शाम से अनाज लाने के लिए सफर से पहले इस धन को किसी विश्वसनीय व भरोसा वाले व्यक्ति के पास अमानत के रूप में रखवा दें और वापस आकर ले लें। आप हम सब के निकट बड़ी भरोसे वाली हैं। आपकी ईमानदारी व सच्चाई के बारे में किसी को थोड़ा सा भी सन्देह नहीं। आप यदि हमारी यह अमानत रखना स्वीकार कर लें तो हम पर बहुत बड़ा उपकार करेंगी और अल्लाह आपको बड़ा सवाब प्रदान करेगा। हमारी केवल एक शर्त है कि यह अमानत दोनों साथियों की मौजूदगी में वापस कीजिएगा। अकेले किसी एक को न दीजिएगा।

एक सज्जन महिला ने भलाई का काम समझ उनकी बात मान ली। वे दोनों सलाम करके चले गए। पूरा एकसाल बीत गया और सखरा व हुबैरह अपनी अमानत वापस लेने नहीं आए। एक सुबह उम्मे सालिम चाश्त कीनमाज पढ़ने के बाद तसबीह पढ़ ही थीं कि सखरह ने अन्दर आने की आज्ञा चाही। अन्दर आकर सलाम किया और फिर रोना धोना शुरू कर दिया। उम्मे सालिम ने रोने का सबब पूछा तो जवाब दिया कि उसका साथी और कारोबारी साझी दार बीमार होकर अल्लाह को प्यारा हो गया। उसने उसका कफन दफन करने के बाद उसके घर वालों की भी आर्थिक मदद कर दी है। अब उसकी आर्थिक स्थिति काफी कमजोर और खराब हो चुकी है। यदि अमानत वापस मिल जाती तो अपना करोबार दोबारा शुरू कर देता।

उम्मे सालिम ने उसको शर्त याद दिलाते हुए अमानत वापस करने से साफ इनकार कर दिया। मगर सखरह ने रोना धोना शुरू कर दिया और उसके हाथ पांव जोड़ने लगा। उसने उम्मे सालिम के घर वालों और पड़ोसियों को समझाया और उनको यकीन दिलाया कि उसका साथी

मरचुका है, अब उसे कैसे हाजिर कर सकता है।

सबने दया खाकर उम्मे सालिम से उसकी सिफारिश की। महिला का दिल नर्म पड़ गया और उन्होंने पूरे के पूरे सौ दीनार उसके हवाले कर दिये। सखरा ने दीनार लिये और तेजी से बाहर निकल गया। इस घटना के ठीक तीन दिन के बाद हुबरैह आया और उसने उम्मे सालिम से अमानत तलब की। उम्मे सालिम ने अचानक उसे देखा तो हैरान रह गयी और उसकी तलब को सुनकर परेशान हो गयी। उसे विश्वास हो गया कि सखरह ने उसके साथ धोखा किया है। उम्मे सालिम ने हुबैरह को बताया कि सखरह ने यह कहा था कि तुम मर चुके हो और रकम लेकर चला गया, इसलिए उसकी जिम्मेदारी खत्म हो चुकी है।

हुबैरह ने शर्त का उल्लंघन करने की बात कह कर सौ दीनार की मांग की लेकिन उम्मे सालिम ने सख्ती से इनकार कर दिया। हुबैरह नाराज होकर सीधे अमीरूल मोमिनीन हजरत उमर रज़ि० की अदालत में पहुंच गया और उम्मे सालिम के विरुद्ध दावा कर दिया। हजरत उमर (रज़ि०) ने उम्मे सालिम को बुलाया और हुबैरह के दावे की पुष्टि चाही। उम्मे सालिम ने पूरी घटना शुरू से अन्त तक सुना दी और कहा कि वह सखरह के झूठे बयान से धोखा खा गयी और उसकी बात पर विश्वास कर लिया कि उसका साथी मर गया है। अब शर्त पूरी होना संभव नहीं है, इसलिए उन्हों पूरी रकम सखरह को दे दी क्योंकि अब वही अकेला उसका मालिक था।

अमीरूल मोमिनीन उम्मे सालिम के इस बयान से संतुष्ट नहीं हुए और अधिक छानबीन करनी चाही। उम्मे सालिम को अनुमान हो गया कि शर्त के उल्लंघन करने के आधार पर हो सकता है, उनको जुर्माना अदा करना पड़े इसलिए उन्होंने अमीरूल मोमिनीन हजरत उमर रज़ि० से विनती की कि इस मामले को हजरत अली रज़ि० की अदालत में भेजने की अनुमति देदें। हजरत उमर रज़ि० ने अत्यन्त उदारता के साथ यह मुकदमा अली रज़ि० की अदालत में भेज दिया। अतः प्रतिवादी उम्मे सालिम और वादी हुबैरह दोनों हजरत अली रज़ि० की अदालत में उपस्थित हुए।

हजरत अली ने पूरी बात सुनी। फिर सवाल व जवाब किया दोनों पक्षों से जिरह के बाद उनको विश्वास हो गया कि उम्मे सालिम सच्ची है और हुबैरह बहाने बाज है। हजरत अली ने हुबैरह से पूछा : क्या तुम अमानत की शर्त पर कायम हो और उसका सम्मान करते हो? हुबैरह ने कहा कि हां मैं अपनी शर्त पर कायम हूं और उसके विरुद्ध किसी भी तरह कुछ करने को तैयार नहीं हूं।

अब हजरत अली रज़ि० ने फैसला सुनाया कि उम्मे सालिम उसी समय अमानत वापस करेंगी जब हुबैरह सखरह के साथ अदालत में हाजिर होगा। उम्मे सालिम ने फैसला सुनकर इत्मीनान का सांस लिया और उसे विश्वास हो गया कि सखरह कभी भी नहीं आएगा। हुबैरह बिना कोई जवाब दिए वहां से चला गया।

अल्लामा इब्ने कय्यिम जोजी इस अदालती फैसले का उल्लेख करते हुए दो उसूलों की ओर इशारा करते हैं और कहते हैं कि फैसले के लिए किसी एक पक्ष की मांग पर अत्यन्त उदारता के व्यवहार से मुकदमा एक अदालत की दूसरी अदालत में भेजा जा सकता है दूसरे वह काजी को सत्य का पता लगाने के लिए अपनी सूझ बूझ के साथ अच्छी तरह छानबीन कर लेनाचाहिए। ताकि किसी पर अत्याचार और दूसरे के अधिकारों का हनन न हो सके।

हजरत अली का आदर्श फैसला

राजधानी के इंस्पेक्टर जनरल आफ पुलिस ने सुब्ह सवेरे अमीरूल मोमिनीन हजरत अली रज़ि० की मज्लिस में हाजिर होने की अनुमति मांगी। उसके साथ लोगों की एक बड़ी भीड़ थी। पुलिस के चार आदमी एक व्यक्ति को हिरासत में लिए हुए थे। उसके दाएं हाथ में एक छुरी थी, जिससे खून टपक रहा था, उसके दोनो हाथ खून से तर थे। उनके पीछे पुलिस के कुछ आदमी खून में नहाई हुई एक लाश उठाए ला रहे थे। पूरी भीड़ जोर जोर से किसास (खून का बदला खून) की मांग कर रही थी।

गिरफ्तार व्यक्ति के चेहरे का रंग मारे डर के पीला पड़ चुका था, पांव लड़खड़ा रहे थे, पूरा शरीर कांप रहा था। सख्त बेचैनी और परेशानी साफ झलक रही थी दृश्य बड़ा ही दुखद और डरावना था। जो देखता ठहर जाता और हत्यारे के विरुद्ध अपने आक्रोश को दर्शाता और उसे फांसी दिए जाने की मांग दोहराता।

अमीरूल मोमिनीन की सेवा में उपस्थित होकर पुलिस प्रमुख ने ब्यान दिया कि अमीरूल मोमिनीन हमने इस व्यक्ति को लाश के पास इस हालत में खड़ा पाया कि हाथ में छुरी है, जिस से खून की बूंदें टपक रही थीं और मृतक के शरीर में से खून बह रहा था। घटनास्थल पर इस व्यक्ति के सिवा और कोई नहीं था। अतः हमें बिल्कुल विश्वास है कि यह कत्ल इसी ने किया

है, किसी और ने नहीं। अतः हम इसे गिरफ्तार करके ले आए हैं। हमें प्राथमिक जांच सेपता चला है कि मृतक मध्यम वर्ग का आदमी था। उसकी न किसी से दुश्मनी थी और न किसी से कुछ लेना देना था। वह अपने घर जा रहा था, सम्भवतः किसी बात पर, जो हम मालूम नही कर सके, मुल्जिम का उस व्यक्ति से झगड़ा हो गया और इसने क्रोध में आकर उस पर छुरी से वार कर दिया होगा।

अमीरूल मोमिनीन ने गिरफ्तार व्यक्ति से पूछा क्या तुम्हीं ने इस आदमी को कत्ल किया है? उसने आसानी से स्वीकार कर लिया कि कत्ल उसी ने किया है। मगर कत्ल किन परिस्थितियों में और किन कारणों से किया, इस बारे में उसने एक शब्द भी नही कहा और अपना मुंह बन्द कर लिया। कत्ल के इकरार के सिवा कोई शब्द उस के मुंह से नहीं निकला। अमीरूल मोमिनीन और उनकी मज्लिस के कुछ सदस्यों ने और पुलिस ने पूरी कोशिश की कि अपराधी यह बताए कि उसने यह कत्ल किन परिस्थितियों में किया है? मगर उसकी जबान खामोश रही। अमीरूल मोमिनीन सय्यदना अली रज़ि० ने इन स्पष्ट तर्कों और आरोपी के इकरार के आधार पर किसास के तौर पर आरोपी को कत्ल कर देने का आदेश दिया, मगर कहा कि इस समय उसे जेल ले जाओ। अस्र की नमाज के बाद इस फैसले पर अमल किया जाए और उसे सार्वजनिक स्थान पर लेजाकर उसकी गर्दन उड़ा दी जाए।

पुलिस अपराधी को लेकर चली ही थी कि भीड़ में से एक आदमी निकला और उसने पुलिस वालों को ठहर जाने के लिए कहा। फिर अमीरूल मोमिनीन की ओर बढ़ा और ऊंची आवाज से पुकार कर कहा कि अमीरूल मोमिनीन कातिल वह नहीं है, मैं हूं। वह तो निर्दोश है। कत्ल तो मैंने किया है। अचानक यह दावा सुनकर सब हैरान रह गए और भीड़ नार–ए–तकबीर अल्लाहु अकबर पुकारने लगी। अमीरूल मोमिनीन ने उसे पास आने को कहा और उससे उसके दावे का स्पष्टीकरण मांगा।

उस व्यक्ति ने बड़े इत्मीनान के साथ और स्पष्ट शब्दों में बताना शुरू किया, मैं एक निर्धन व्यक्ति हूं। मेरे पास कुछ भी नहीं है। भूख और परेशानी ने मुझे बुरा रास्ता दिखाया। शैतान ने मेरे दिल में यह वसवसा डाला कि यह आदमी जो इतने सवेरे निकल कर जा रहा है, निश्चय ही बहुत सा धन लेकर जा रहा होगा। यदि सन्नाटे में इसे कत्ल कर दिया, तो किसी को भी पता न लगेगा और तुम इसके माल को आसानी से हासिल करके अपनी भूख और प्यास मिटा लोगे और अगली जिन्दगी आराम से गुजरेगी। इसी लालच और पागलपन में मैंने अपना खंजर निकाला और जैसे ही वह इस खंडर में दाखिल हुआ, उस पर हमला करके कत्ल कर दिया।

इसके बाद जैसे ही मैंने उसके कपड़े की तलाशी लेने का इरादा किया पुलिस की आहट सुनी तो डरा कि कहीं पकड़ न लिया जाऊं। तेजी के साथ खंडर से निकला, मेरी नजर उस निर्दोश व्यक्ति पर पड़ी। मैं खंडर के एक कोने में छुप गया। पुलिस के आदमी पहुंच चुके थे, उन्होंने घटना स्थल पर इस व्यक्ति को देख कर गिरफ्तार कर लिया और मैं निकल कर शोर मचाते और चीखते चिल्लाते लोगों की भीड़ में शामिल हो गया। जब आपने इस निर्दोश व्यक्ति से किसास किए जाने का फैसला किया तो मैंने सोचा कि मैं दो आदमियों के कत्ल का जिम्मेदार ठहराया जा रहा हूं और इस तरह मेरे जिम्मे दोहरा गुनाह होगा। इसलिए सही बात का इकरार कर लिया। मैं ही असली कातिल हूं। यह व्यक्ति निर्दोश है।

अमीरूल मोमिनीन ने पहले आरोपी को बुलाया और उससे पूछा कि तुमने झूठा इकरार क्यों किया? तो उसने कहा : अमीरूल मोमिनीन मैं कसाई हूं। सुब्ह अंधेरे में अपनी दुकान आया, एक गाय जिब्ह की और उसकी खाल उतारने लगा कि मुझे पेशाब करने की जरूरत हुई, मैं इसी हालत में छुरी लिए निकट के खंडर में आया। अपनी जरूरत पूरी की और दुकान वापस जाने लगा कि अचानक मेरी नजर इस व्यक्ति पर पड़ी जो खून में डूबा हुआ था। मैं यह देख कर बौखला गया और उसे निकट से देखने लगा। खून में डूबी हुई छूरी मेरे हाथ में थी कि पुलिस अन्दर आ गयी, मुझे उस समय होश आया, जब उसने मुझे गिरफतार कर लिया और लोगोंने कहना शुरू किया कि यही अपराधी है, यही कातिल है और कोई नहीं। मुझे विश्वास हो गया कि अब मैं बच नहीं सकता और मेरी बात का कोई विश्वास न करेगा इस लिए मैंने कत्ल करना स्वीकार कर लिया।

अमीरूल मोमिनीन ने फरमाया : एक गलत बात को तुमने माना क्यों? उसने जवाब दिया कि अमीरूल मोमिनीन मैं मजबूर था। पुलिस ने मुझे लाश के पास इस हालत में देखा था कि उसके शरीर से खून बह रहा था और मेरे हाथ में खून में डूबी छुरी थी और मेरे अलावा कोई वहां नहीं था, मुझे विश्वास हो गया कि मेरी किसी बात का वजन नहीं होगा अतएव मैंने स्वयं इस बात को मान लिया और

अल्लाह से पनाह वरक्षा और अच्छे बदले की विनती करने लगा।

अब अमीरूल मोमिनीन के सामने दो व्यक्ति थे। दोनों ने कत्ल करना स्वीकार कर लिया था । मामला बड़ा ही गम्भीर था और विचारनीय भी था। इस मज्लिस में नबी सल्ल० के नवासे हजरत हसन बिन अली रज़ि० भी मौजूद थे और अपने बाप से न्याय एवं न्यायालय के सम्बन्ध में कुछ सीख रहे थे। अमीरूल मोमिनीन हजरत अली रज़ि० ने इस मामले में हजरत हसन की राय पूछी आपने थोड़ी देर सोचा फिर कहा : अमीरूल मोमिनीन इस दूसरे व्यक्ति ने यद्यपि एक आदमी को कत्ल किया, मगर अपने अपराध को स्वीकार करके एक दूसरे आदमी की जान भी बचा ली है। अल्लाह का इर्शाद है कि जिसने एक जान को बचाया मानो उसने सारे इन्सानों को जीवन प्रदान किया। मेरी राय है कि दोनों को छोड़ दिया जाए। हजरत अली रज़ि० ने हजरत हसन रज़ि० की इस राय को स्वीकार कर लिया और दोनों को रिहा कर के बैतुलमाल से मरने वाले की दियत (कत्ल का जुर्माना) अदा कर दिया।

हज़रत अली के निर्णय में जिरह व जिज्ञासा

अमीरूल मोमिनीन हजरत अली इब्न अबी तालिब रज़ि० की अदालत और मज्लिस में पाबन्दी से उपस्थित होने वाले एक बुजुर्ग असबग बिन नबाता अशजअी थे। उनका सम्बन्ध अरब के प्रसिद्ध कबीला अशजा से था। वे अबुल कासिम के नाम से प्रसिद्ध थे। उन्होंने अमीरूल मोमिनीन उमर बिन खत्ताब रज़ि० और अमीरूल मोमिनीन अली रज़ि० के निर्णयों को उनके वास्तविक रूप में बड़ी गहरी नजर से और विस्तार से प्रस्तुत किया है। इन पंक्तियों में हम उन्हीं का प्रस्तुत किया हुए एक निर्णय का उल्लेख कर रहे हैं, जो फौजदारी मुकदमों की छान बीन और सच्चाई का पता लगाने का एक शिक्षा प्रद उदाहरण है।

अबू आमिर खजरजी एक सफल और अनुभवी व्यापारी थे। वे तिजारती काफिलों के साथ विभिन्न देशों में माल लेकर जाते बेचते और लाभ कमाते। उनका घराना खुशहाल और सम्पन्न था। उनका जीवन बड़ी सुख शान्ति के साथ हंसी खुशी बसर हो रहा था। उनके बच्चों में से कुछ तो शिक्षा प्राप्त करने में व्यस्त थे और बड़ा लड़का आमिर घर पर रहकर उनकी तिजारत में हाथ बटा रहा था।

अबू आमिर खजरजी ने एक दिन अपने घर वालों से कहा कि एक तिजारती काफिला शाम जारहा है। उसमें मेरे कुछ दोस्त भी हैं। इरादा है कि इस बार शाम से काफी माल लेकर आऊं। क्योंकि इधर उसकी बड़ी मांग है। उन्होंने यह विश्वास भी व्यक्त किया कि वे काफिले के अपने अन्य साथियों के साथ जल्द ही वापस आ जाएंगे। काफिला चला गया। निर्धारित अवधि के बाद अबू आमिर के घर वाले बड़ी बेचैनी से उनकी वापसी का इन्तजार करने लगे और शाम के बहुमूल्य और सुन्दर उपहारों का सपना देखने लगे। नवजवान आमिर अपने बाप के दोस्तों के घरों के चक्कर लगाने लगा ताकि उनके आने का पता लग सके।

एक दिन अचानक पता चला कि काफिला के लोग वापस आ गए हैं मगर उसके पिता नहीं आए। उसने काफिले में जाने वाले अनेक लोगों से पूछा कि उसके बाप क्यों नही आए? सबने एक ही जवाब दिया कि रास्ते में उसके बाप की मौत हो गई और उन्होंने कुछ सामान भी नहीं छोड़ा। इसके अलावा उन लोगों ने मौत का कारण तिजारत में भारी घाटा बताया। उनके सामान व कफन दफन के बारे में भी कोई बात नहीं बतायी। लड़के को सन्देह हुआ। उसने काजी शुरैह की अदालत में मुकदमा पेश कर दिया और कहा कि उसके बाप काफिले में फुलां फुलां के साथ गये थे, उसे सन्देह है कि उसके बाप का सामान हड़प करने के लिए उन लोगों ने उनको कत्ल कर दिया है।

काजी शुरैह ने कानूनी कार्यवाही के अनुसार इस दावे के बाद काफिले वालों को बुलाया और लड़के के दावे के बारे में उनको बताया। काफिले वालों ने कत्ल से इनकार किया। लड़के के पास न कोई गवाह था और न कोई प्रमाण था। अतः काजी शुरैह ने उन लोगों से कसम ली, उन्होंने कसम खाली, सब छोड़ दिए गए। आमिर ने यह निर्णय सुना मगर वह अल्लाह की जात से निराश न हुआ। मां और भाई बहनों को ढारस बंधाई कि यद्यपि काजी शुरैह की अदालत से निर्णय कातिलों के पक्ष में हो गया है लेकिन उसे उम्मीद है कि वह अमीरूल मोमिनीन हजरत अली रज़ि० की सूझ बूझ व तत्व दर्शिता के कारण न्याय अवश्य प्राप्त कर लेगा।

वह हजरत अली रज़ि० की सेवा में पहुंचा और अब तक की पूरी घटना विस्तारसे उनको बतायी । काजी शुरैह के निर्णय से भी अवगत कराया और कहा कि उसे विश्वास है कि उन लोगों ने उसके बाप को कत्ल किया है। आप से न्याय का इच्छुक हूं। यह कह कर वह रो पड़ा।

हजरत अली रज़ि० ने उसे तसल्ली दी और पुलिस को आदेश

दिया कि पुलिस के दो–दो आदमी, काफिले के एक–एक आदमी को अपनी हिरासत में ले लें। उन सब को एक दूसरे से इस प्रकार अलग अलग रखें कि एक आदमी किसी दूसरे से किसी तरह का कोई सम्पर्क न कर सके। इशारों में भी बात न होने पाए। पुलिस ने तुरन्त इस आदेश का पालन किया और काफिले वालों को पकड़ कर अलग अलग हिरासत में रख दिया। इसके बाद हजरत अली रज़ि० ने बयान लिखने वाले मुन्शी को बुलाया और एक–एक अपराधी को अलग अलग बुलाकर उसके ब्यान लिखने का आदेश दिया। अतः काफिले के एक आदमी को अकेले बुलाया और उससे निम्न सवाल पूछे :

१. तुम लोगों ने शाम का सफर कब किया था?

२. सफर के दौरान किन किन स्थानों पर ठहरे थे?

३. तुम्हारा सफर कैसा था?

४. इस नवजवान के बाप की मौत किस दिन हुई?

५. क्या मरने से पहले वह बीमार हुए थे?

६. किस बीमारी में मौत हुई?

७. उसे गुस्ल किसने दिया था?

८. जनाजे की नमाज किसने पढ़ायी थी?

९. दफन में कौन कौन शरीक था?

१०. किस स्थान पर दफन किए गए?

११. उन्होंने किस बात की वसीयत की ?

१२. अपनी वसीयत में किसको गवाह बनाया?

१३. उनकी जबान से आखिरी शब्द क्या निकले?

१४.उनके कपड़े जो मरते समय पहने हुए थे कहां हैं?

मुन्शी ने जब एक व्यक्ति के जवाब लिख लिए तो अमीरूल मोमिनीन और उनके पास बैठे हुए लोगों ने जोर दार आवाज में तकबीर पढ़ी। अपराधियों ने तकबीर सुनकर समझा कि उनके साथी ने अपराध स्वीकार कर लिया।

उस व्यक्ति को वापस भेज दिया गया और फिर दूसरे को और फिर तीसरे को, सार यह कि बारी बारी सबको अलग अलग बुलाकर यही सुवाल किए गए। हर एक का जवाब दूसरे से भिन्न था। इन जवाबों से पता लगा कि नवजवान आमिर के बाप मौत की कहानी झूठी है। काफिले के लोग झूठ बोल रहे हैं। हजरत अली रज़ि० ने पहले आदमी को दोबारा बुलवाया और कहा कि खुदा के दुश्मन तुम्हारे साथियों के बयान से तुम्हारा झूठ और हठधर्मी साबित हो गयी है। अब तुमको केवल सच्ची बात ही बचा सकती है फिर उसे जेल ले जाने का आदेश दिया और जोर दार आवाज से तकबीर पढ़ी । बाकी अपराधियों ने समझा कि उसने अपराध स्वीकार कर लिया।

इसके बाद अमीरूल मोमिनीन ने दूसरे आदमी को बुलाया और उससे कठोर शब्दों में बात की, तो उसने कहा कि खुदा गवाह है, मैंने उनके कत्ल को ना पसन्द किया। मैंने न तो कत्ल किया और न उनका माल लिया। यह काम दूसरों ने किया है और कातिल उन्हीं में से एक है।

फिर तीसरे को और फिर चौथे को बुलाया और इसी प्रकार सवाल किए । हर एक ने अपराध को स्वीकार कर लिया मगर कहा कि कत्ल पहले आदमी ने किया है। पहले आदमी को फिर बुलाया गया तो उसने अपने अपराध को स्वीकार लिया और फिर सबने जो कुछ हुआ था साफ साफ बता दिया।

अपराधियों के स्वीकार कर लेने के बाद हजरत अली रज़ि० ने फैसला दिया कि काफिले के समस्त लोग इस घिनौने अपराध की सजा में कत्ल कर दिए जाएं और आदेश दिया कि वारिसों का छीना हुआ माल वापस करें। इस निर्णय से आमिर और उसके घर वालों की तसल्ली हुई और अपने बाप के लिए मगफिरत की दुआ की।

हजरत अली रज़ि० ने अपनी इस छानबीन में जिस तत्व दर्शिता का प्रमाण दिया है, आज का उन्नत समाज उसका कोई उदाहरण शायद ही प्रस्तुत कर सके। हजरत अली रज़ि० का काजी (न्या धीश) नियुक्त के सिलसिले में यह सुनहरा निर्देश भी देखिए। लोगों के बीच निर्णय के लिए अपने निकट सर्वोच्च व सर्वेश्रेष्ठ व्यक्ति का चयन कीजिए, जिससे मुकदमें में तंगी पेश न आए और अपराधियों की हठधर्मी उसे डग मगा न दे।

वह स्वयं भी अपनी गलती पर आग्रह न करे। जब उसके सामने सत्य व सही बात आ जाए तो सच्चाई को अपनाने से न हिचकिचाए। उसके दिल में लालच न आने पाए। साधारण रूप से ही सोच विचार से काम न ले। सन्देह के समय अच्छी तरह ठहर कर विचार करे और मजबूत तर्कों के आधार पर निर्णय दे। वादी, प्रतिवादी के आग्रह व बहस से बहुत कम घबराए और मामले के सही रूख को पेश करने में सब्र व संयम से काम ले। जब निर्णय लेने का समय आ जाए तो ऐसा साफ व स्पष्ट निर्णय दे कि उसमें कोई लाग लपेट या ऐंच पेंच की गुन्जाइश न रहे और उसे कोई बड़े से बड़े लालच या डर भी प्रभावित न कर सके लेकिन ऐसे लोग कम ही है।

मुहम्मद (सल्ल०) और उनका सन्देश

मौ० स० सुलैमान नदवी

इस्लाम के पैगाम में हर चीज साफ और मुफस्सल है नमाज, रोजा, हज उनके आदाब व शरायत, इबादात के तरीके खुदा को याद की दुआयें, नमाज का समय, रोजा और हज का समय, प्रत्येक की नियमावली दुआ व मुनाजात, गुनाहों के इकरार और तौबा व नदामत (पश्चाताप) तथा आराध्य एवं आराधक के मध्य राज व नयाज़ की वह शिक्षायें दी गई हैं जो आत्मा को जीवन देती है, मनकी गुत्थी खोलती है और जो मनुष्य को ईश्वर तक पहुंचा देती है।

कर्म का दूसरा भाग मुआमलात अर्थात देश व समाज के नियमों का है। यह अंश हजरत मूसा अलै० के सन्देश में बड़े विस्तार के साथ मौजूद है। पैग़ामे–ए–मुहम्मदी ने इनको बड़ी सीमा तक बनाये रक्खा है किन्तु इन नियमों को भी लचीला बना दिया है और इसके क्षेत्र को व्यापक बना दिया है। ज़बूर और इन्जील इस से खाली है। तलाक़ आदि से सम्बन्धित एक दो धाराएं इन्जील में अवश्य हैं । अन्य विश्व न्यायी और स्थायी धर्म की अवश्यकताओं की पूर्ति के लिए देश व समाज के नियमों को आवश्कता थी और चूंकि हजरत ईसा अलै० के पैगाम में इस का अभाव था अतः ईसाइयों को यह चीजें यूनान और रोम से लेनी पड़ी। पैगामे मुहम्मदी ने इनमें से प्रत्येक भाग को सूक्षम दृष्टि से परिपूर्ण बनाया। इन नियमों को इस्लामी राज्यो में बराबर बरता गया और आज भी इस से अच्छा कानून दुनिया प्रस्तुत नही कर सकती।

कर्म का तीसरा अंश आचरण है। तौरेत में आचरण से सम्बन्धित सात अनुच्छेद हैं जिनमें से माता–पिता के आज्ञापालन की एक ईजाबी (पाजीटिव) तालीम हैं और बाकी सल्की (निगेटिव) हैं तू खून मत कर, तू चोरी न कर, तू बलातकार न कर, तू अपने पड़ोसी पर झूठी गवाही न दे, तू अपने पड़ोसी की स्त्री को मत चाह, तू अपने पड़ोसी के माल का लालच न कर। इनमें भी छठी बात चौथे में और सातवीं बात तीसरे में शामिल है अतः चार ही बातें रह गईं।

इन्जील में भी इन्हीं बातों को दोहराया गया है। और संक्षेप में दूसरे के साथ प्रेम करने की शिक्षा भी दी गई है किन्तु पैगामे मुहम्मदी न इसे बड़े विस्तार से बताया। उस ने न केवल आचरण की बारह धाराएं निर्धारित कीं अपितु उन्हें परिपूर्ण एवं परिमार्जित किया। मनुष्य की विभिन्न शक्तियों का सदुपयोग बताया, उसकी एक एक कमजोरी को इंगित किया, मन की एक एक बीमारी की जांच की औ उसका उपचार बताया यह बारह बातें सूरे बनीइसराईल में बतायी गयी हैं। इनमें ग्यारह आचरणऔर एक एकेश्वर वाद (तौहीद) से सम्बन्धित हैं। ग्यारह में पांच ईजाबी हैं और पांच सलबी तथा एक सलबी और ईजाबी का मिश्रण है। यह बारह बातें इस प्रकार हैं – १. मां बाप की इज्जत और फरमाबरदारी (आज्ञापालन) कर २. जिन का तुझपर हक है उनका हक अदा कर ३. अनाथ (यतीम) से अच्छा व्यवहार कर ४. नाप तौल और पैमाना ठीक रख ५. अपना वचन पूरा कर कि तुझ से इस की पूछ गछ होगी यह पांच ईजाबी बातें हैं। १. तू अपनी सन्ता की हत्या न कर २. तू अकारण किसी की जान न ले ३. बलातकार के निकट न जा ४. अज्ञात बात के पीछे न चल ५. जमीन पर अहंकार न कर। यह पांच सलबी बातें हैं। ११. फजूल खर्ची न कर बल्कि बीच का रास्ता अख्तियार कर – यह आदेश सलबी व ईजाबी का मिश्रण है । १२. अल्लाह के अतिरिक्त किसी की इबादत मत कर।

इस्लामी शिक्षा के विशाल क्षेत्र को ईमान और अमल सालेह के दो शब्दों में व्यक्त कर सकते हैं। यह दो चीजें हैं जो पैगामे मुहम्मदी के प्रत्येक अंश में रची बसी हैं। और कुर्आन पाक में इन्हीं दोनों को मोक्ष की आधार शिला बताया गया है। अर्थात हमारा ईमान पवित्र और अडिग हो और अमल नेक और सालेह हो। यहां पर पैगामे मुहम्मदी का केवल वह अश प्रस्तुत किया जाता है जिसने ईमान व अमल के क्षेत्र में सारे विश्व की त्रुटियों को ठीक किया और आधार भूत त्रुटियों को दूर किया जिन के कारण मानवता पद दलित होकर भटक रही थी।

इन बुनियादी बातों में सबसे पहली बात जो पैगामे मुहम्मदी के द्वारा

सामने आयी वह सृष्टि एवं समस्त प्राणियों में मानव का स्थान है और यही तौहीद की जड़है। इस्लाम से पहले मनुष्य अधिकांश प्राणियों से अपने को हीन समझता था। वह कठोर पत्थर, ऊंचे पर्वत, बहते दरिया, हरे भरे वृक्ष, बरसते पानी, दहकती आग, डरावने जंगल, विषैले सांप, गरजते शेर दूध देती गाय, चमकते सूरते, झिलमिलाते तारों, काली रातों, भयानक प्रतिमाओं आदि आदि दुनिया की हर उस चीज को जिससे वह डरता था, अथवा जिससे लाभ का इच्छुक था, पूजता था और उस के सामने सर झुकाता था। हजरत मोहम्मद सल्ल० ने आकर दुनिया को यह पैगाम दिया कि, "ऐ लोगो ! यह सारी चीजें तुम्हारी आका (स्वामी) नहीं, बल्कि तुम इनके स्वामी हो। यह तुम्हारे लिए पैदा की गई हैं तुम इनके लिए पैदा नहीं किये गये। वह तुम्हारे आगे झुकी हैं तुम क्यों उनके आगे झुकते हो। तुम इस सृष्टि में खुदा के नायब और खलीफा को इसलिए यह सृष्टि तुम्हारे अधीन की गयी है। तुम इसके अधीन नहीं किये गये। वह तुम्हारे लिए हैं तुम इसके लिए नहीं हो (कुर्आन के सूरे अनआम, सूरे नहल, सूरे हज और सूरे आल इमरान में इसका उल्लेख आया है)

नादान इन्सानों ने स्वयं एक दूसरे को भी खुदा बनाया था। चाहे वह अवतार बनकर आये हों या फिरऔन वनमरूद बनकर अथवा पोप या आलिम व दरवेश बनकर अपने को आराध्य मनवाना चाहा हो, यह भी मानवता का अपमान था। पैगाम–ए–मोहम्मदी ने इसको जड़ से काट दिया। यहां तक कि नबियों को भी छूट नही दी कि वह यह कहें, "खुदा को छोड़ मेरे बन्दे हो जाओ" आल इमरान । आखों से ओझल आत्माओं में फरिश्ते और आंखों के सामने की आत्माओं में नबी सर्वोत्कृष्ट हैं किन्तु वह भी इन्सान के आराध्य (माबूद) नहीं हो सकते–आल इमरान

इस्लाम ने मनुष्य के स्थान को ऊंचा उठाकर तौहीद की वास्तविकता को भी स्पष्ट कर दिया। यहां खुदा के साथ कोई कैसर नहीं, जो कुछ है उसी खुदा का है कैसर का कुछ नहीं, उसी का राज्य है और उसी का प्रशासन है।

हजरत मोहम्मदस सल्ल० का दूसरा सैद्धान्तिक और बुनियादी पैगाम यह है कि मनुष्य जन्म से पाक (पवित्र) और बेगुनाह है उसकी प्रकृति उस सादी सिलेट जैसी है जिस पर कुछ लिखा न गया हो। वह स्वयं मनुष्य ही है जो अपने अच्छे बुरे कामों से फरिश्ता या शैतान बन जाता है। चीन, बर्मा और हिन्दुस्तान के अनेक धर्म आवागमन को मानते हैं यूनान के कुछ लोग भी इस विचार से सहमत हैं किन्तु इस भ्रम ने मानवता को बेकार कर दिया और उसके कन्धे पर बड़ा भारी बोझ रख दिया है। उसके प्रत्येक कार्य को दूसरे कार्य का प्रतिफल बताकर उसको विवश कर दिया और उसकी हर जिन्दगी को दूसरी जिन्दगी के हाथ में दे दिया है। इस अकीदे के अनुसार किसी मनुष्य का दोबारा पैदा होना ही उसके पाप की दलील है। ईसाई धर्म ने भी मानवता के इस बोझ को कम नही किया, बल्कि और बढ़ा दिया है। ईसाई धम्र ने यह शिक्षा दी कि प्रत्येक मनुष्य अपने बाप आदम अलै० के पाप के कारण पापी है चाहे उसने स्वयं कोई पाप न किया हो। इसलिए इन्सानों की बख्शाइश के लिए एक गैर इन्सान की जरूरत है तो जन्मजात पापी न हो और वह अपनी जान देकर मानव जाति के लिए प्रायश्चित कर सके।

परन्तु हजरत मोहम्मद सल्ल० ने आकर दुखी इन्सानों को यह शुभ सन्देश सुनाया कि तुम न अपने पूर्व जीवन और कर्म के हाथों विवश हो और न अपने बाप आदम अलै० के पाप के कारण जन्मजात पापी हो बल्कि तुम जन्म से पवित्र एवं निर्दोष हो अब तुम स्वयं अपने कर्म से चाहे अपनी पवित्रता और शुद्धता को बनाये रखो अथवा अपवित्र एवं अशुद्ध बनजाओ। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फरमाया, "कोई बच्चा ऐसा नहीं जो फितरत (प्रकृति) पर पैदा नहीं होता, लेकिन मां बाप उसको यहूदी यानसरानी या मजूसी बना देते हैं जिस प्रकार हर जानवर मूलरूप से सही व सालिम बच्चा पैदा करता है, क्या तुमने देखा कि कोई कान कटा बच्चा भी वह जनता है।"

हजरत मोहम्मद सल्ल० के दुनिया में आने से पहले दुनिया की कुल आबादी विभिन्न घरानों में बंटी हुई थी, लोग एक दूसरे से अपरिचित थे। हिन्दुस्तान के ऋषियों ओर मुनियों ने आर्यावर्त से बाहर खुदा की आवाज के लिए कोई जगह नहीं रक्खी थी। उनके निकट परमेश्वर केवल आर्यावर्त के वासियों के बाज खानदानों की भलाई चाहता था, जरदश्त ईरान की पवित्र भूमि के अतिरिक्त और कहीं खुदा की आवाज नही सुनता था। बनी इसराईल अपने वंश से बाहर किसी रसूल के जन्म का अधिकार नहीं समझते थे। किन्तु पैगाम–ए–मुहम्मदी ने पूरब, पच्छिम, उत्तर दक्षिण खुदा की आवाज

सुनी और बताया कि खुदा की रहनुमायी सबके लिए है इसमें देश, जाति और भाषा का कोई भेदभाव नहीं। उसकी निगाह में फिलस्तीन, ईरान, हिन्दुस्तान, और अरब सब बराबर हैं। हर जगह उसके सन्देश की बांसुरी बजी।

एक यहूदी अपनी कौम से बाहर किसी पैगम्बर को स्वीकार नहीं करता; एक ईसाई के लिए बनी इसराईल के या अन्य देशों के धार्मिक नेताओं को मानना आवश्यक नहीं और ऐसा करने से उसके सच्चे ईसाई होने में कोई अन्तर नहीं पड़ता। हिन्दू धर्म के लोग आर्यावर्त के बाहर खुदा की किसी आवाज के समर्थक नहीं। ईरान के जरदश्ती को अपने यहा के अतिरिक्त दुनिया हर जगह अन्धेरी मालूम होती है। किन्तु अल्लाह के रसूल सल्ल० का पैगाम है कि सारी दुनिया एक ही खुदाकी बनायी हुई है और खुदा की दीन में सारी कौमें और नसलें बराबर की साझेदार हैं। ईरान हो या हिन्दुस्तान, चीन हो या यूनान, अरब हो या शाम हर जगह खुदा का नूर (प्रकाश) समान रूप से चमका। जहां जहां इन्सानों की आबादी थी, खुदा ने अपने दूत भेजे, अपने रहनुमा उतारे और उनके माध्यम से सन्देश भेजे।

कोई मुसलमान उस समय तक मुसलमान नहीं हो सकता जब तक कि वह दुन्या के समस्त पैगम्बरों तथा आसमानी किताबों पर विश्वास न रक्खे। जिन जिन पैगम्बरों के कुरआन में नाम है उनको नाम बनाम और जिन के नाम कुरआन ने नही बताये है वह कहीं भी हुए हों और उनके जो नाम भी हो उन सबको सच्चा और सत्यवादी मानना जरूरी है।

अनेक धर्मों ने खुदा और बन्दे के बीच वास्ते (माध्यम) कायम कर रक्खे थे। प्राचीन बुतखानों में पुजारी थे। ईसाइयों ने कुछ हवारियों और उनके प्रभारी पोपों को यह स्थान दिया कि वह जो जमीन पर बांधें गे वह आसमान पर बांधा जाएगा और जो जमीन पर खोलेंगे वह आसमान पर खोला जायेगा। उनको तमाम इन्सानों के गुनाह माफ करने का अधिकार दिया गया। उनके बिना कोई इबादत नहीं हो सकती हिन्दुओं में ब्रह्मा खास खुदा के दाहिने हाथ से पैदा हुए हैं। खुदा और बन्दे के बीच वही माध्यम है। उनके बिना कोई हिन्दू इबादत नहीं हो सकती। किन्तु इस्लाम में पुजारियों एवं पादरियों का कोई वर्ग विशेष नहीं। यहां कोई प्रीस्ट क्लास नहीं है। यहां खोलने और बांधने का अधिकार केवल खुदा को है। यहां गुनाहों को क्षमा करने का अधिकर केवल अल्लाह को है। आराध्य एवम आराधक के बीच इबादत में किसीका हस्तक्षेप नहीं। हर व्यक्ति जो मुसलमान है नमाज का इमाम हो सकता है, कुरबानी कर सकता है, निकाह पढ़ा सकता है। समस्त धार्मिक प्रकियायें सम्पन्न कर सकता है। यहां सबके लिए उदऊनी असतबिज लकुम (ऐ लोगो! बिला वास्ता मुझे पुकारो, मैं तुमको जवाब दूंगा) की गूंज है। हर व्यक्ति अपने खुदा से बातें कर सकता है, अपनी दुआओं में उसको पुकार सकता है, उसके आगे झुक सकता है और स्वयं श्रद्धांजलि अर्पित कर सकता है। यह सबसे बड़ी आजादी है जो हजरत मोहम्मद सल्ल० के माध्यम से इन्सानों को मिली अर्थात खुदा के बारे में इन्सानों को इन्सानों की दास्ता से मुक्ति मिली।

इन्सानों की तालीम व हिदायत के लिए समय समय पर जो महान आत्मायें आती रहीं उनके प्रति प्रारम्भ से लोगों में अत्यधिक श्रद्धा की बाहुल्यता रही है। यहां तक कि नादानों (विवेकहीन) ने उनको स्वयं खुदा या खुदा का रूप ठहराया। बाबुल, नसीरिया और मिस्र के हैकलों में काहिनों (ज्योतिषी) की शान खुदा के समान नजर आती है। हिन्दुओं में वह अवतार के रूप में माने जाते हैं । बौद्ध और जैन धर्म के अनुयाइयों ने गौतम बुद्ध और महावीर को स्वयं खुदा मान लिया। ईसाइयो ने अपने पैगम्बर को खुदा का बेटा ठहराया। बनी इसराई के यहां हर वह व्यक्ति जो भविष्यवाणी कर सकता था नबी और पैगम्बर था। इस्लाम ने इस महान पद की सही हैसियत निर्धारित की और बताया कि नबी ने खुदा हैं न खुदा के रूप हैं न खुदा के अवतार हैं न खुदा के बेटे और रिश्तेदार है। वह आदमी हैं और केवल आदमी हैं कुरआन में है, "कह दो ऐ पैगम्बर ! मैं भी तुम्हारी ही तरह मनुष्य हूं।" किन्तु आगे यह भी बताया गया कि यद्यपि वह मनुष्य है लेकिन अपने चमतत्कार (कमालात) की हैसियत से समस्त इन्सानों में सर्वोपरि हैं। वह खुदा से संवाद करते हैं, उन पर खुदा की वही आती है। वह बेगुनाह और मासूम होते हैं ताकि गुनाहों के लिए नमूना बनें और उनके हाथों से खुदा अपने हुक्म और इशारे से अपनी कुदरत के अजायबात (चमत्कार) दिखाता है। वह लोगों को नेकी (सत्कर्म) की तालीम देते हैं। उनकी इज़्ज़त, इताअत और आज्ञापालन सब पर फर्ज़ है। वह खुदा के खास सच्चे बन्दे हैं।

सादिका तस्नीम फारूकी

उम्मुल मोमिनीन

हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि०)

आपका नाम हिन्द था, कुन्नियत उम्मे सल्मा, कुरैश के खानदान मखजूम से हैं।

अबू उमय्या (हजरत उम्मे सलमा (रज़ि०) के बाप) मक्का के मशहूर दिलेर व अच्छे कामों में खूब खर्च करने वाले थे, सफर में जाते तो तमाम काफिले की देख–रेख खूब करते थे, इसी लिए जादुर्रक्ब के नाम से मशहूर थे। (अलइसाबा भाग ८ पेज २४)

हजरत उम्मे सल्मा (रज़ि०) ने उनही की गोद में नाजो नेअमत से परवरिश पाई।

अब्दुल्लाह बिन अब्दुल असद से जो अबू सलमा के नाम से मश्हूर हैं और जो उम्मे सलमा (रज़ि०) के चचा जाद और आं हजरत (सल्ल०) के रजाई (दूध शरीक) भाई थे, निकाह हुआ।

नुबूवत मिल जाने के शुरू ही में अपने पति के साथ ईमान ले आयीं।

और उन्हीं के साथ हबशा की ओर हिजरत की हबशा में कुछ जमाना तक रूक कर के मक्का वापस आयीं और यहां से मदीना हिजरत की, हिजरत में उनको यह विशेषता हासिल है कि यह वह पहली औरत हैं जो हिजरत करके मदीना में आयीं।

हिजरत का किस्सा बड़ा अफसोसनाक है, हजरत उम्मे सल्मा (रज़ि०) अपने पति के साथ हिजरत करना चाहती थीं (उनका बेटा सल्मा भी साथ था) परन्तु (हजरते उम्मे सल्मा (रज़ि०) के) खानदान वालों ने रूकावट डाली, इसलिए हजरत अबू सल्मा (रज़ि०) उनको छोड़कर मदीना चले गये थे, और वह अपने घर वापस आ गयी थीं (उधर बेटे सल्मा को अबू सल्मा (रज़ि०) के खानदान वाले हजरत उम्मे सल्मा(रजि०) के पास से छीन ले गये) इसलिए उम्मे सल्मा (रज़ि०) को और भी तकलीफ थी, अतः रोजाना घबराकर घर से निकल जातीं और अबतह में बैठ कर रोया करती थीं, ७–८ दिन तक यह हालात रही और खानदान के लोगों को एहसास तक न हुआ, एक दिन अबतह से उनके खानदान का एक व्यक्ति निकला और उम्मे सल्मा (रज़ि०) को रोते हुए देखा तो उसका दिल भर आया, घर आकर लोगों से कहा, इस गरीब पर क्यों जुल्म करते हो, उसको जाने दो और उसका बच्चा उसका दे दो, जाने की इजाजत मिली तो बच्चे को गोद में लेकर ऊंट पर सवार हो गयीं और मदीना की ओर चल दीं, वह बिल्कुल अकेली थीं, अर्थात साथ में कोई मर्द न था, तन्ओम में उस्मान बिन तल्हा (कअ़बः की चाभी जिस व्यक्ति के हाथ में थी) की नजर पड़ी, बोला, "किधर का इरादा है?" कहा, "मदीने का" पूछा, कोई साथ में है "जवाब दिया, "अल्लाह और यह बच्चा" उस्मान ने कहा, यह नहीं हो सकता, तुम अकेली कभी नहीं जा सकतीं, यह कह कर ऊंट की लगाम पकड़ी और मदीना की ओर चल दिया रास्ते में जब कहीं ठहरता तो ऊंट को बिठा कर किसी पेड़ के नीचे चला जाता और हजरत उम्मे सल्मा (रज़ि०) उतर पड़तीं, जब जाने का समय आता तो ऊंट पर कजावा रख कर हट जाता और उम्मे सल्मा (रज़ि०) से कहता, "सवार हो जाओ"। हजरत उम्मे सल्मा (रज़ि०) फरमातीं हैं कि मैंने ऐसा शरीफ आदमी कभी नहीं देखा, यहां तक कि आप (रज़ि०) मदीना पहुंच गयीं, कुबा की आबादी नजर आई तो बोला, अब तुम अपने पति के पास चली जाओ वह यहीं ठहरे हुए हैं" यह उधर चलीं और उस्मान ने मक्का का रास्ता लिया।

(जरकानी भाग ३ पेज २७२, २७३)

कुबा पहुंची तो लोग उनकाहाल पूछते थे और जब यह अपने बाप का नाम बतातीं तो उनको यकीन नहीं आता था। (यह आश्चर्य जनक बात उनके अकेले सफर करने पर थी, शुरफा की औरतें इस तरह बाहर निकलने की हिम्मत नहीं करती थीं) और हजरत उम्मे सल्मा (रज़ि०) मजबूरन खामोश होती थीं, परन्तु जब कुछ लोग हज के इरादा से मक्का गये और उन्होंने अपने घर पत्र भिजवाया तो उस समय लोगों को यकीन हुआ कि वह सही अबू उमय्या की बेटी हैं, इसलिए कि अबू उमय्या कुरैश के बहुत मश्हूर और इज्जतदार व्यक्ति थे, इसलिए हजरत उममे सल्मा (रज़ि०) बड़ी इज्जत की नजर से देखी गयीं।

(मुसनद इब्ने हंबल भाग ६ पेज ३०७)

कुछ जमाना तक पति का साथ रहा, हजरत अबू मूसा (रज़ि०) बड़े उत्तेजित थे, बद्र व उहद में शरीक थे, गजव–ए–उहद में कुछ जख्म खाए जिनकी वजह से ठीक न हो सके। जमादिउस्सानी सन ४ हि० में उनका जख्म फटा और इसी सदमा से वफात पाई ।(जरकानी भाग ३ पेज २७३)

हजरत उम्मे सल्मा (रज़ि०) आं हजरत (सल्ल०) की खिदमत में पहुंची और वफात की खबर सुनाई और आं हजरत (सल्ल०) खुद उनके घर पर तशरीफ लाए, घर में कोहराम मचा था, हजरत उम्मे सल्मा कहती थी "हाय गरीबी में यह कैसी मौत हुई।" आं हजरत (सल्ल०) ने फरमाया, सब्र करो, उनकी मग्फिरत की दुआ मांगो और यह कहा कि खुदावन्दा ! उनसे बेहतर उनका जानशीन अता कर।" उसके बाद अबू सल्मा (रज़ि०) की लाश पर तशरीफ लाए और जनाजः की नमाज बहुत एहतिमाम से पढ़ी गयी, हजरत मुहम्मद (सल्ल०) ने नौ तकबीरें कहीं, लोगों ने नमाज के बाद पूछा या रसूल अल्लाह (सल्ल०) आप को सहव तो नहीं हुआ? फरमाया, यह हजारों तकबीरों के योग्य थे, वफात के समय अबू सल्मा (रज़ि०) कीआंखें खुली रह गयी थीं, मुहम्मद (सल्ल०) ने खुद हाथ मुबारक से आंखें बन्द कीं और उनकी मग्फिरत की दुआ मांगी।

अबूसल्मा (रजि०) की वफात के समय उम्मे सल्मा (रज़ि०) हामला थीं, बच्चा होने के बाद इद्दत गुजर गयी तो हजरत अबू बक्र (रज़ि०) ने निकाह का पैगाम दिया, परन्तु हजरत उम्मे सल्मा (रज़ि०) ने इन्कार किया, उनके बाद हजरत उमर (रज़ि०) आंहजरत (सल्ल०) का पैगाम (सन्देश) लेकर पहुंचे, हजरत उम्मे सल्मा (रज़ि०) ने कहा मेरे कुछ उज्र हैं। मैं बहुत खुद्दार औरत हूं बाल बच्चों वाली हूं। मेरी उम्र ज्यादा है, मुहम्मद (सल्ल०) ने उन सब को मान लिया, हजरत उम्मे सल्मा(रज़ि०) को अब उज्र क्या हो सकता था? अपने लड़के से (जिनका नाम उमर था) कहा उठो और रसूल (सल्ल०) से मेरा निकाह करो।

(सुन्ने निसाई पेज ५१)

(पृष्ठ २६ का शेष)

थायमिन भी है जो शरीर के रेशे में आक्सीजन की तरह कार्य करता है। इसी विटामिन की सहायता से शरीर के रेशे आक्सीजन की सहायता से शक्ति का निर्माण करते हैं और शरीर के हर भाग की मांसपेशियां सही ढंग से काम करती हैं।

(पृष्ठ २८ का शेष)

कि हमने जैनब से तुम्हारा निकाह कर दिया। इसलिए हुजूर सल्ल० ने तलाक़ की इद्दत पूरी होने पर हज़रत ज़ैनब से निकाह कर लिया। इस निकाह से यह बात वाज़ेह तौर पर साबित हो गई कि लैपालक सगे लड़के की तरह नही है उसकी बेवा या मुतल्लक़ा से इद्दत के बाद निकाह जाइज़ है।

0522-256005
Asif Bhai Saree Wale
M.A. Saree Bhandar
Manufacturer & Supplier of :
Chickan Sarees
& Suit Pieces
In Front of Kaptan Kuan, Shahi Shafa Khana, New Market. Shop No. 1, Chowk, Lucknow-03

(पृष्ठ ३० का शेष)

नाबालिग़ लड़की या लड़के का निकाह वली के बिना नहीं हो सकता।

प्रश्न : निकाह में ईजाब व क़बूल का क्या तरीक़ा है?

उत्तर : निकाह पढ़ाने वाला पहले निकाह का ख़ुत्बा पढ़े फिर सब लोगों की मौजूदगी में या कम से कम दो गवाहों के सामने दूल्हा से कहे कि मैंने फुलां (लड़की का नाम ले) बिन्त फुलां (लड़की के बाप का नाम ले) को इतने महर पर तुम्हारे निकाह में दिया, तुमने क़बूल किया? (इसको ईजाब कहते हैं)

दूल्हा कहे मैंने कबूल किया। (इसको कबूल कहते हैं) बस निकाह हो गया। दो गवाहों के बिना और ईजाब व क़बूल के बिना निकाह नहीं हो सकता। निकाह हमेशा के लिए होता है कुछ वक़्त के लिए नहीं हो सकता।

प्रश्न : इमाम जहरी नमाज़ पढ़ा रहा था क़िराअत में .हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का नाम आया मुक़्तदी ने सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम कह दिया तो उसकी नमाज़ का क्या हुक्म है?

उत्तर : इमाम ने जहरी नमाज़ में ऐसी आयत पढ़ी जिस में .हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का नाम आ गया जवाब में मुक़्तदी ने सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम कह दिया तो उसकी नमाज़ फ़ासिद (ख़राब) हो गई फिर से पढ़े।

प्रश्न : जमाअ़त की नमाज़ में एक मुक़्तदी को छींक आई उसने अल्हम्दु लिल्लाह कहा, दूसरे मुक़्तदी ने यरहमुकल्लाह कहा तो दोनों की नमाज़ का क्या हुक्म है? (डाक्टर मुहम्मद फ़ारूक़–रूदौली)

उत्तर: दोनों की नमाज़ फ़ासिद हो गई दोनों दोबारा पढ़ें। इसलिए कि एक ने छींक के जवाब में अल्हम्दु लिल्लाह कहा, दूसरे ने अल्हम्दु लिल्लाह कहने के जवाब में यरहमुकल्लाह कहा।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के मुंह बोले बेटे

हज़रत ज़ैद बिन हारिसा (रज़ि०)

मुहसिना फारूकी

हजरत जैद (रज़ि०) बिन हारिसा हुजूर (सल्ल०) के महबूब तरीन सहाबा में से थे आप का सम्बन्ध अरब के मश्हूर कबीला बनू कुज़ाआ की शाख बनू बक्र से था यह कबीला यमन के अरब कबीलों में बड़ी इज्जत की निगाह से देखा जाता था इनकी मां कबीला बनू तय से थीं जैद के बचपन में एक बार उनकी मां उन्हें अपने साथ ले कर मैके जा रही थीं, रास्ते में एक जगह जैद खेमे के बाहर खेल रहे थे कि कबीला बनू कैनकाअ के कुछ डाकू उस बच्चे को उठा ले गये और उकाज़ के बाजार में ले जाकर बेच डाला, जैद को मक्का के ताजिर हकीम बिन हिज़ाम ने चार सौ दिरहम में खरीद लिया और अपनी फूफी खदीजा बिन्ते खुवैलिद की खिदमत में बतौर तोहफा पेश कर दिया कबीला बनू कैन काअ के लोगों ने तो अपने तौर पर जैद पर बहुत बड़ा जुल्म किया था लेकिन कुदरत को कुछ और मंजूर था। इधर जैद मक्का में गुलाम बनाकर बेचे जा रहे थे और उधर उनके घर में कोहराम मचा हुआ था, जैद के पिता को बच्चे की गुमशुदगी का इल्म हुआ तो उनकी हालत बिगड़ गई कबीले के लोगो को लेकर सब जगह छान डाला जगह जगह तलाश किया लेकिन कुछ पता न चला। नाकामी के बावजूद बाप निराश होकर बैठ नहीं गया बल्कि उसने इरादा कर लिया कि उम्र भर अपने लख्ते जिगर की तलाश जारी रखेगा यहां तक कि उसे पालें।

हजरत जैद के वालिद हारिसा बिन शरजील अरबी जुबान के बुलन्द पाया शायर भी थे बच्चे की जुदाई में उन्होंने दुख उठाया था उसका इजहार उनके अशआर के इस अनुाद से भी होता है।

मैं जैद की गुमशुदगी पर जारो कतार रोता रहा और मुझे यह इल्म नहीं है क जैद के साथ क्या मामला पेश आया है क्या मालूम वह जिन्दा है हम उसके आने की उम्मीद रखें या उसे मौत का जालिम पंजा दबोच ले गया है।

काश कि मैं जान सकता कि क्या तू कभी वापस आयेगा मुझे तेरा वापस आना दुनिया से बे नियाज करने के लिए काफी है।

यह अशआर बड़े दर्दनाक है यहां सारा कलाम पेश करना मुमकिन नहीं लोग हर समय गम नसीब बाप को बेटे की तलाश में ही देखते उस का कहना था कि मैं मरने से पहले अपने दूसरे बेटों को वसीयत कर जाऊंगा कि जब तक जिन्दा हैं अपने भाई की तलाश जारी रखें।

फिर यूं हुआ कि एक बार यमन के कुछ लोग जब हज्ज करने मक्का आये तो उन्होंने एक बाजार में जैद को देख लिया और देखते ही पहचान गयेकि ये हारिसा बिन शरजील का बेटा जैद है जैद से पूछा तो उसने भी तस्दीक की लोगों ने बेटे के सामने बाप की हालत बयान की तो उसकी भी आंखों में आंसू आ गये परन्तु काफिला वालों से उसने कहा – "अल्लाह का शुक्र है कि अब मैं बनू मअद के एक ऐसे घराने में हूं जो बहुत अच्छा है और जो नस्ल दर नस्ल इज्जत व शराफत का मजहर चला आ रहा है।

ये मअद बिन अदनान हुजूर (सल्ल०) के बाप, दादा थे।

उन लोगों ने जब वापस जाकर हारिस बिन शरजील को खबर दी कि जैद सही व सलामत मक्का में मौजूद है तो वह उसी वक्त अपने भाई कअब बिन शरजील को लेकर मक्का की तरफ रवाना हो गयो और वहां हूजूर (सल्ल०) की खिदमत में हाजिर होकर कहा "ऐ इब्ने अब्दुल मुत्तलिब" आप कअबः के हिफाजत करने वाले गरीबों के गम दूर करने वाले हमारा बेटा आपके पास है जितना फिद्या (बदला) जी चाहे ले लीजिए और हमारा नूर चश्म हमें वापस कर दीजिए। आप (सल्ल०) ने जैद को बुलाया और कहा तुम इन दोनों को पहचानते हो।

जैद ने कहा मैं आप (सल्ल०) पर कुर्बान मैं पहचानता हूं एक मेरा बाप है और दूसरा चचा।

हुजूर (सल्ल०) ने ज़ैद के सर परस्तों से कहा कि जैद को इख्तियार दिया जाए अगर तुम्हारे साथ जाना चाहे तो मुझे कोई एतिराज न होगा मैं एक कौड़ी जैद के बदले न लूंगा और

अगर जैद मेरे पास रहना चाहे तो मैं उसे तुम्हारे हवाले नहीं करूंगा।

जैद के बाप और चचा ने यह तजवीज सुनी तो खुशी से उनका चेहरा चमक उठा उन्होंने सोचा कि हमारा बेटा किसी को हम पर कैसे तर्जीह (प्रधानता) दे सकता है परन्तु जैद का जवाब सुन कर वह हैरान रह गये जैद ने कहा मैं जुजूर (सल्ल०) पर किसी को हरगिज तर्जीह (प्रधानता) न दूंगा मैं आप (सल्ल०) के साथ ही रहूंगा। इस जवाब से हारिसा और कअ़ब की उम्मीदों पर पानी फिर गया परन्तु एक ही लम्हा में उन्होंने अपने आपको संभाल लिया और मुतमइन हो गये उन्होंने सोचा कि उनके बेटे ने जिस को चुन लिया है आखिर वह कितना बुलन्द मकाम होगा और और उसके यहां उसको किस कदर राहत मिली होगी जब वह अपने मां बाप के मुकाबले में उसको चुन रहा है यह सोच कर वह अपने बच्चे से गले मिले और चले गये।

हुजूर (सल्ल०) जैद को अपने साथ लेकर खान–ए–कअ़बः गये और लोगों को खिताब करते हुए जैद का हाथ अपने हाथ में पकड़ा फिर कहा लोगो मैंने जैद को अपना बेटा बना लिया है। उस दिन से हजरत जैद को जैद बिन मुहम्मद (सल्ल०) कहा जाने लगा बाद में जब सूरः अहजाब में मुतबन्ना (लेपालक) के बारे में यह हुक्म आया कि वह मुतबन्ना (लेपालक) बना लेने से बेटा नहीं बन जाता तो जैद को फिर से जैद बिन मुहम्मद (सल्ल०) के बजाए जैद बिन हारिसा कहा जाने लगा।

हजरत जैद हुजूर (सल्ल०) के इस कदर करीब थे कि उन्होंने अपने मां बाप पर आप को तर्जीह दी थी यह वह जमाना था जब कि हुजूर (सल्ल०) पर अभी वह्य नाजिल नहीं हुई थी जब हुजूर (सल्ल०) को ताजे नुबूवत से सरफराज किया गया तो जैद ने इस मरहले पर भी हक की तरफ लपकने में देर नही की गुलामों में (हुजूर सल्ल० ने उन्हें आजाद कर दिया था) सबसे पहले जैद ही ने छोटी उम्र में इस्लाम कुबूल किया हजरत अबू बक्र सिद्दीक (रज़ि०) हजरत खदीजतुल कुबरा हजरत अली (रज़ि०) और हजरत जैद (रज़ि०) बिन हारिसा यह वह चार खुश नसीब लोग हैं जो सबसे पहले कलिमा पढ़ कर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के करीबी हो गये थे। हिजरत के बाद जब वह मदीना पहुंचे तो औस के रईस उसैद बिन हुजैर से उनकी मुवाखात (भाईचारगी) हुई। हजरत जैद (रज़ि०) का अपना मुकाम बहुत बुलन्द है और सहाबा की जमाअत में उनकी बड़ी इज्जत और एहतिराम था आप के साथ आपके बेटे उसामा (रज़ि०) को भी अजीमुश्शान मर्तबा हासिल था उसामा (रज़ि०) हुजूर (सल्ल०) के बहुत महबूब सहाबी थे। हुजूर (सल्ल०) ने जब सहाबिया उम्मे ऐमम के बारे में इरशाद फरमाया कि जो शख्स चाहे कि उसकी शादी किसी जन्नती खातून से हो वो उम्मे ऐमन से शादी कर ले तो हजरत जैद (रज़ि०) ने तुरन्त अपने आप को पेश किया और उनसे शादी कर ली उन्हीं नेक औरत के पेट से उसामा (रज़ि०) ने जन्म लिया।

हजरत जैद (रज़ि०) सहाबा किराम की पूरी जमाअत में एक अकेले सहाबी हैं कि जिनका नाम कुर्आन मजीद में आया है और सहाबा के बारे में सिर्फ इशारात कुर्आन में मिलते हैं सिद्दीक अकबर (रज़ि०) के बारे में खुले शब्दों में सूरः तौबा की हिजरत वाली आयत में इशारा मिलता है।

परन्तु पूरे कुर्आन मजीद में किसी और सहाबी का सराहतन नाम लेकर जिक्र नहीं किया गया ये एजाज सिर्फ जैद इब्न हारिस ही को हासिल है सूरः अहजाब में उनका हजरत जैनब बिन्त जहश से निकाह और फिर तलाक का जिक्र आया है वहां कुर्आन मजीद ने बताया है कि :

हुजूर अकरम (सल्ल०) ने जैद (रज़ि०) से अपनी फूफी जाद बहन हजरत जैनब बिन्त जहश से शादी कर दी थी पति पत्नी का आपस में निबाह न हो सका हुजूर (सल्ल०) ने बहुत कोशिश की कि भलाई हो जाए लेकिन हालात ठीक न हुए आखिर कार जैद (रज़ि०) ने हजरत जैनब (रज़ि०) को तलाक दे दी सूरः अहजाब की तफसीर से पता चलता है कि अल्लाह को अरब के समाज में फैली हुई लेपालक के बारे में तमाम गलत और बेहूदा रस्मों को खत्म करना जरूरी था इसके लिए हुजूर अकरम (सल्ल०) की जात को चुना गया जैद जो लेपालक रह चुके थे उन्हीं की बीवी से हुजूर अकरम (सल्ल०) की शादी अल्लाह तआला ने कर दी बाकी पत्नियों को ये शरफ हासिल नहीं कि उनकी शादी पर जिबराइल अमीन अल्लाह के यहां से ये साबित करने आये हों कि अल्लाह ने ये निकाह कर दिया है। ये सिर्फ हजरत जैनब (रज़ि०) ही हैं कि जिनके बारे में हुजूर सल्ल० को बताया गया

(शेष पृ. २६ पर)

शरीर को स्वस्थ रखने के लिए खास जानकारियां

डॉ० देवेन्द्र त्रिपाठी

विटामिन हमारे शरीर के पोषण और विकास का सबसे महत्वपूर्ण कारक है। विटामिनों के द्वारा ही शरीर की सारी क्रियाओं पर एक आटोमेटिक नियंत्रण चलता रहता है। शरीर में जब विटामिन कम हो जाते हैं तो उस हिस्से से संबंधित बीमारियां शरीर को दबोचने लगती हैं। शरीर की कमजोरी केवल शरीर परही नही बल्कि आदमी के देखने सुनने विचार करने और सहन करने की ताकत को प्रभावित करती है। मानव जीवन के हर प्रक्रिया चाहे वह मानसिक हो या शारीरिक उसका सम्बन्ध शरीर से सीधा जुड़ा होता है। इस प्रकार विटामिनों की मनुष्य के जीवन में स्वस्थ बनाये रखने में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। विटामिनों के बारे में जानकारी यूं तो आज के जमाने में केवल डाक्टरों की बात नहीं रह गयी है। हमारे यहां ढेर सारे लोग विटामिनों के इस महत्व को बिना बताये जानते हैं। लेकिन अभी भी न केवल गांवों में बल्कि शहरों तक में और काफी पढ़े–लिखे तबकों में भी विटामिन के समुचित प्रयोग के बारे में लोग उदासीन रहते हैं।

यहां एक बात और साफ कर देना जरूरी है कि विटामिनों के बारे में यह भ्रांति रखना गलत है कि विटामिनों को केवल विटामिनों की गोलियों या सिरप से ही लिया जा सकता है। बल्कि यहां यह कहा जा सकता है कि स्वस्थ आदमी को भी विटामिनों की लगातार जरूरत पड़ती है लेकिन उसके लिए विटामिनों की गोलियों या सिरप की जरूरत नहीं होती। स्वस्थ आदमी यदि अपने रोजमर्रा के खानपान पर थोड़ा ध्यान रखे तो उसके भोजन की थाली में ही ढेर सारे विटामिन मिल सकते हैं। सिरप तो केवल उन लोगों के लिए जरूरी होता है जो लोग सामान्य से अधिक कमजोर हो चुके हों और उनको अलग से विटामिनों की जरूरत होती है। गोलियों और सिरप में दिये जाने वाले विटामिन भी उन्हीं पेड़ पौधों और वनस्पतियों से तैयार किये जाते हैं। विटामिनों के सभी प्रकार हमारे भोजन में मौजूद रहते हैं। हमारी सब्जियां और फल इनसे भरे रहते हैं। बस जरूरत इस बात की होती है कि उनके प्रयोग में थोड़ी सावधानी बरती जाय और उन्हें तरह–तरह प्रयोग में लाया जाय कि उनका विटामिनों से भरा हिस्सा कहीं रसोई घर के कूड़े में न चला जाय। यहां हम आपको विटामिनों के प्रकार महत्व और उनमें पाये जाने वाले श्रोतों की एक सामान्य जानकारी दे रहे हैं।

विटामिन ए

हरी पत्तेदार सब्जियां–धनियां की पत्ती, चौराई का साग, कुल्फे का साग इसके प्रमुख स्रोत हैं। आलू गाजर शकरकन्द, घुइयां आदि कन्दों में भी यह पाया जाता है। सभी पीले फलों, आम, खरबूजा, तरबूज और बेल आदि फलों में इसकी प्रचुर मात्रा होती है। लौकी वर्ग की सब्जियों में भी यह मिलता है। गेहूं के चोकर में इसकी कुछ मात्रा पायी जाती है। इस विटामिन के प्रयोग के व्यक्ति की त्वचा चमकदार कांतियुक्त तथा निरोग रहती है। चर्म रोगों के कीटाणु जल्दी शरीर को प्रभावित नहीं कर पाते। बढ़ते बच्चों की हड्डियों के विकास में इसकी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। इस विटामिन को ब्यूटी विटामिन कहा जाता है। क्योंकि इसके प्रभाव से त्वचा में आकर्षण और सौंदर्य बढ़ता है। शरीर की सभी क्रियाओं मसलन, पाचन, मूत्राशय, गुर्दा आदि क्रियाओं को नियंत्रित करने में इस विटामिन का महत्वपूर्ण योगदान है। इसकी कमी से त्वचा कांतिहीन होकर खुरदरी हो जाती है तथा आंखों की चमक कम हो जाती है। मनुष्य को इसकी कमी से दृष्टि हीनता भी हो सकती है सभी प्रकार की पथरी के रोग इस विटामिन की कमी से हो सकते हैं।

विटामिन बी

विटामिनों की चर्चा में सबसे अधिक जरूरी और महत्वपूर्ण विटामिन बी है। क्योंकि विटामिन बी का सीधा नियंत्रण पाचन पर रहता है। यदि विटामिन बी की मात्रा शरीर में प्रचुरता से है तो शरीर का पाचन तंत्र ठीक से काम करता है। लीवर मजबूत रहता है और शरीर की बाकी कियायें संतुलित ढंग से चलती रहती हैं। विटामिन बी के भी प्रकार होते हैं जो शरीर की अलग–अलग क्रियाओं में योगदान देते रहते हैं। विटामिन बी एक प्रकार का

(शेष पृष्ठ २६ पर)

आपके प्रश्नों के उत्तर

इदारा

प्रश्नः बाज़ स्कूलों में बच्चियों को स्कर्ट पहनना ज़रूरी है जब कि बच्चियां बालिग़ हो चुकी होती हैं। इसका शरअ़ी हुक्म क्या है?

उत्तर : बच्चियों को सात साल की उ़म्र से सातिर लिबास पहनाना चाहिए और दीन की बातें सिखाना चाहिए और दस साल की हो जाने पर पर्दा कराना चाहिए और बालिग़ हो जाने पर तो पर्दा फ़र्ज़ है। ऐसे स्कूल जिन में नंगा लिबास पहनना ज़रूरी हो स्कर्ट हो या कोई और लिबास उन स्कूलों में बच्चियों को पढ़ाना जाइज़ नहीं। हर मुसलमान पर लाज़िम है कि वह ख़ुद को और अपनी औलाद को नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शरीअ़त का पाबन्द बनाए।

प्रश्न : सोने की अगूंठी या चैन पहन कर मर्द की नमाज़ हो जाए गी या नहीं?

उत्तर : सोने की अंगूठी पहन कर मर्द की नमाज़ हो जाएगी लेकिन नमाज़ मक्रूह होगी इसलिए मर्द को सोने की अंगूठी या ज़ंजीर उतार कर नमाज़ अदा करनाचाहिए लेकिन याद रहे कि मर्दों के लिए सोना पहनना ह़राम है।

प्रश्न : निकाह़ के लिए लड़की से इजाज़त लेने का तरीक़ा बताइये।

उत्तर : बालिग़ लड़की से उसका वली यह कह कर इजाज़त ले कि मैं तुम्हारा निकाह़ इतने मह्र पर फुलां के साथ करने जा रहा हूं तुम्हें मंज़ूर है? चाहिए कि लड़की ज़बान से कहे कि इजाज़त है या कहे मुझे मंज़ूर है। अगर लड़की ख़ामोश रहती है या रोने लगती है तो इसको इजाज़त ही मानेंगे। अगर इजाज़त के वक़्त दो गवाह बना लिये जायें तो अच्छा है लेकिन वली के इजाज़त लेने में गवाह ज़रूरी नहीं।

बालिग़ लड़की का वली अगर किसी दूसरे से कह दे कि तुम इजाज़त लेकर निकाह़ पढ़ा दो। फिर वह वली की मौजूदगी में इजाज़त ले और लड़की ख़ामोश रहे तो इसको इजाज़त समझेंगे। इसमें भी गवाहों का होना अच्छा है ज़रूरी नहीं।

गैर वली के इजाज़त लेते वक्त वली मौजूद न हो तो लड़की की ख़ामोशी या रोना इजाज़त न समझी जाएगी लड़की ज़बान से कहे मुझे मंज़ूर है। लेकिन अगर लड़की की ख़ामोशी या रोने को इजाज़त समझ कर दो गवाहों के सामने निकाह़ पढ़ा दिया गया और लड़की को रूख़्सत कर दिया गया तो लड़की के रूख़्सत हो जाने को इजाज़त समझेंगे और निकाह़ को सह़ीह़ समझेंगे लेकिन अगर लड़की रूख़्सत होने से इनकार कर दे, या दूल्हा को अपने पास न आने दे तो इजाज़त के वक़्त की ख़ामोशी को इजाजत न समझेंगे और ऐसी सूरत में निकाह़ सह़ीह़ न होगा।

लड़की से इजाज़त के वक़्त इजाज़त के सह़ीह़ होने के लिए गवाहों की मौजूदगी शर्त नहीं है लेकिन झगड़ा खड़ा हो जाए तो क़ाज़ी के लिए फ़ैसले में दुशवारी होगी इसलिए गवाह ज़रूर बना लेना चाहिए।

प्रश्न : लड़की का वली (अभिभावक) कौन होता है बयान फरमाइये।

उत्तर : अस्लन लड़की या लड़के का वली उस का बाप है बाप न हो तो दादा, दादा न हो तो पर दादा, इन में से कोई न हो तो सगा भाई, वह न हो तो बाप शरीक सौतेला भाई, फिर भतीजा फिर भतीजे का लड़का, फिर सगा चचा, फिर सौतेला चचा, फिर सगे चचा का लड़का फिर सौतेला चचा का लड़का, फिर बाप का चचा या दादा का चचा, पहले सगा फिर सौतेला, फिर बाप का चचा ज़ाद भाई या चचा फिर मां वली होगी, फिर नानी फिर दादी फिर नाना फिर ह़क़ीक़ी बहन फिर बाप शरीक सौतेली बहन फिर मां शरीक सौतेला भाई, बहन फिर फूफी, फिर मामूं फिर फूफी ज़ाद भाई, फिर ख़ाला ज़ाद भाई वग़ैरह आ़म तौर से बाप न हो तो चचा या भाई या मां को वली समझ लिया जाता है यह सह़ीह़ नहीं है।

वाज़ेह रहे कि ह़नफ़ी मसलक में बालिग़ लड़की के निकाह़ में वली का रोल सिर्फ़ इजाज़त के मुआ़मले में है जैसा कि लड़की से इजाज़त वाले उत्तर में बताया गया लेकिन बेहतर यह है कि बालिग़ लड़की के निकाह़ में भी वली की रज़ामन्दी ह़ासिल की जाए। अलबत्ता

(शेष पृष्ठ २६ पर)

रोजगार की सम्भावनाएं

हबीबुल्लाह आजमी

मेडिकल ट्रांसकृपशन

भारत में मेडिकल ट्रांसकृपशन में रोजगार की दिन बदिन अवसर बढ़ते जाएंगे। यह मेडिकल ट्रांसकृपशन है क्या? वास्तव में यह एक मेडिकल रिपोर्ट है जो मरीज और डाक्टर की बातचीत डाक्टर द्वारा मरीज के रोग का विश्लेषण और विभिन्न जांचों पर आधारित होती है। विदेशी कम्पनियां जैसे अमेरिकन और ब्रिटिश कम्पनियां लागत कम करने के लिए यह रिपोर्ट भारत में तैयार कराती हैं।

भारतीय कम्पनियों में रिपोर्ट कम्प्यूटर द्वारा तैयार की जाती हैं। इंटरनेट से डाक्टर की किसी मरीज के रोग के बारे में बताई हुई जानकारी और विभिन्न मेडिकल जांचों को कम्प्यूटर पर प्राप्त कर उसकी प्रोसेसिंग की जाती है और मेडिकल पुस्तकों के हवाले के साथ यह रिपोर्ट तैयार की जाती है और उन संस्थानों को कम्पनी द्वारा उपलब्ध कराई जाती है जिस से उनका व्यापारिक सम्बन्ध होता है।

इस के लिए कम्प्यूटर की अच्छी जानकारी और अंग्रेजी उच्चकोटि की होनी चाहिए। कोई जरूरी नहीं है कि अभ्यर्थी साइंस ग्रेजुएट हो। अन्य विषयों से स्नातक डिग्री प्राप्त या १०+२ पास अभ्यर्थियों को चयन किया जाता है

यह कम्पनियां अभ्यर्थियों को छः महीने की ट्रेनिंग देती हैं उसके बाद रू० ६००० प्रतिमास वेतन पर नियुक्त करती है। कुछ वर्षों के अनुभव के बाद रू० ८००० प्रतिमास वेतन हो जाता है।

इस रोजगार में पार्ट टाइम जाब की भी सम्भावनाएं हैं। भविष्य में ऐसी कम्पनियों के विस्तार के साथ कई लाख नौकरियों की सम्भावना है।

पेट्रोलियम क्षेत्र में रोजगार के अवसर

पेट्रोलियम क्षेत्र में हुई तरक्की ने दुन्या भर में एक हलचल मचादी है। अब तक इस क्षेत्र में इतनी तरक्की हो चुकी है कि इसमें रोजगार के बहुत से अवसर पैदा हो चुके हैं और भविष्य में सम्भावनाएं बढ़ती ही जाएंगी। १९६०–७० के दशक में तेल की खोज और तेल निकालने के क्षेत्र में भूगर्भ वैज्ञानिकों (जियोलॉजिस्टों) की भारी मांग थी और उसके बाद केमिकल इंजीनियरों की मांग बढ़ी फल स्वरूप भारत के विभिन्न स्थानों पर केमिकल इंजीनियरिंग और उस से सम्बन्धित प्रबन्धन की पढ़ाई प्रारम्भ हुई। यूनिवर्सिटी आफ पेट्रोलियम स्टडीज ने इससे सम्बन्धित कुछ पाठ्यक्रम शुरू किये। यहां बीबीए (बैचलर आफ बिजनेस ऐडमिनिस्ट्रेशन) एम.बीए, बीटेक और एमटेक, एमएससी के पाठ्यकम शुरू किये गये। यहा पाठ्यकम पेट्रोल टेक्नोलॉजी, पेट्रो इंजीनियरिंग, गैस इंजीनियरिंग, आएल एण्ड गैस मैनेजमेंन्ट आदि शाखाओं में प्रारम्भ किए गए।

भविष्य में तेल के विशाल भण्डार के प्रबन्धन और मार्केटिंग के लिए तेल सेक्टर में रोजगार की बड़ी सम्भावना है और रोजगार के अवसर दिन बदिन बढ़ते जाएंगे क्योंकि अब पेट्रोलियम क्षेत्र पर सरकारी अधिकार नहीं रहा और दिन पर दिन सरकारी कंट्रोल भी धीरे धीरे समाप्त हो जाएगा। रिलायंस और एरसार कम्पनियों ने भी पेट्रोलियम क्षेत्र में कदम रख दिया है और इन कम्पनियों में कुशल मैनेजरों और इंजीनियरों की मांग बढ़ेगी। कानूनी पेचीदगियों को हल करने के लिए एलएलएम कोर्स भी शुरू किया गया है।

दाखिले के लिए शैक्षिक योग्यताः बीटेक, बीई, बीएससी, पाठ्यकमों के लिए न्यूनतम योग्यता १०+२ है। कम से कम ५० प्रतिशत अंकों से पास छात्र बीटेक में आवेदन कर सकते हैं।

बीबीए में दाखिले के लिए १०+२ किसी भी संकाय से पास होना जरूरी है। एमई और एमटेक में केमिकल, मैकनिकल और पेट्रोकेमिकल ब्रांच में बीई और बीटेक पास छात्र प्रवेश पाते हैं। एम बीए में दाखिले के लिए साइंस और इंजीनियरिंग में ग्रेजुएट और एल एल एम में प्रवेश के लिए लॉ ग्रेजुएट ही आवेदन कर सकते हैं। ग्रेजुएट स्तर के पाठ्यकम बीई और बीटेक चार वर्ष के और बीएससी और बीबीए तीन वर्ष के हैं। स्नातकोत्तर (पोस्टग्रेजुएशन) स्तर के सभी कोर्स दो वर्ष के हैं। पेट्रोलियम इंजीनियरिंग के छात्रों को कच्चे तेल का उत्पादन उनका शोधन (साफ करना) ड्रिलिंग मैकेनिक्स, गैस प्रोसेसिंग, तेल और उसकी प्रापर्टीज

तथा पर्यावरण संरक्षण विषयों का अध्ययन कराया जाता है।

तेल प्रबन्ध के कोर्स में कुशल प्रबन्धन के सभी गुणों से लैस किया जाता है ताकि वह किसी कम्पनी या क्षेत्र का प्रबन्धन अच्छे ढंग से कर सकें। इस कोर्स में पेट्रोल इकानोमिक्स, पेट्रोल इण्डस्ट्री और एकाउंटिंग, पेट्रोल रिटेलिंग व्यापार और पेट्रोल सेक्टर से जुड़े देशों की तेल नीतियों का विशेष अध्ययन कराया जाता है।

संभावनाएं : आने वाले जमाने में इस क्षेत्र में भारी मांग होगी। भारत में हर वर्ष लगभग साढ़े सात लाख लोगों के लिए रोजगार का अनुमान लगाया गया है।

इस के अतिरिक्त शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों के पेट्रोल पम्पों पर डाक, दूरसंचार, इंटरनेट, आटोमोबाइल मैकेनिकल शाप खुलने की संभावनाएं हैं जहां रोजगार के अवसर मिलेंगे।

प्रमुख शिक्षण संस्थाएं :

१. अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी अलीगढ़ फोन : ०५७१–२७००२२० कोर्स–बीटेक, एमटेक (पेट्रोकेमिकल)

२. यूनिवर्सिटी आफ पेट्रोलियम एवं एनर्जीस्टडीज–पेट्रोटावर ए–१, कैलाश कालोनी, दिल्ली –फोन ०११–५१७३०१५१

३. इंडियन स्कूल आफ माइंस, धनबाद – फोन ०३२६–२२१००२४

कोर्स : बी टेक, एम टेक

४. देहरादून कैंपस, पेट्रोलियम हाउस, ३६५ स्ट्रीट नं. १ वसंत विहार, देहरादून फोन – ०१३५–२७६४३७०

कोर्स – बीबीए, एमबीए, बीटेक,एमटेक, एमएससी, एलएलएम।

५. नागपुर विश्वविद्यालय रवीन्द्रनाथ टैगोर मार्ग, नागपुर फोन – ०७१२–२५२५४१७

कोर्स – बीएससी।

६. कोलकाता विश्वविद्यालय, कोलकाता फोन – ०३३–२२४१६८४

कोर्स–बीटेक

७. आंध्र विश्वविद्यालय, बालटियर, विशाखा पत्तनम फोन–०८६१–२७५४८७१

कोर्स – बी. टेक

महात्मागांधी विश्वविद्यालय कोट्टायम फोन : ०४८१–२७३१०५०

कोर्स : बी एस सी (पेट्रो केमिकल)

0522-256005
Asif Bhai Saree Wale
M.A. Saree Bhandar
Manufacturer & Supplier of :
Chickan Sarees & Suit Pieces
In Front of Kaptan Kuan, Shahi Shafa Khana, New Market. Shop No. 1, Chowk, Lucknow-03

0522-264646
Bombay Jewellers
The Complete Gold & Silver Shop
84, Victoria Street, Akbari Gate, Lucknow.

(पृष्ठ ४० का शेष)

रोज उलटती पलटती और उसके अक्षरों की खूबसूरत बनावट को देखकर भावविभोर होती और फिर उसे एक खास मेज पर रख देती और घर वाले उसकी इस अदा को आश्चर्य से देखते रहते। इस प्रकार छह महीने का अरसा बीत गया।

एक दिन उसका घरएक बड़ी दुर्घटना का शिकार हो गया। घर में आग लग गयी और देखते ही देखते पूरे घर का सामान तो जलकर राख हो गया, पर बच्ची जिस कुरआन पर मोहित थी वह पूरी तरह सुरक्षित है।

यह घटना लंदन के एक समीपवर्ती शांत गांव में घटी। इसके बाद तो घर का माहौल ही बच्ची के हक में हो गया दादा बच्ची का पक्षधर हो गया और उस पर जो डांट–डपट उसके विशेष रुजहान की वजह से पड़ती रहती थी, वह खत्म हो गयी। दादा ने घर वालों से कहा कि यदि बच्ची चर्च न जाए तो उसे कुछ न कहा जाए, जबकि ईसाई परिवार के बच्चों का नियमित रूप से चर्च जाना एक सामान्य बात है। फिर तो घर की काया बदलने लगी। अब मां भी इस्लाम, कुरआन और उस धर्म की विशेषताओं के संबंध में जानकारी हासिल करने लगी और अपने पिछले रवैये पर अफसोस भी करती रहती। उस ने कुछ इस्लामी साहित्य का भी विधिवत रूप से अध्ययन किया जिसने उसे साम से समीरा बना दिया और अपने इस्लाम स्वीकार करने का एलान कर दिया।

(संदर्भ : अरबी साप्ताहिक अल–आलम अल–इस्लामी, मक्का,२१ जून २००४)

जिन्नातों के रहने की जगहें

अबू मर्गूब

कुछ जिन्नों ने हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से अपने रहने की जगहें पूछीं।

एक हदीस में है कि बिलाल बिन हारिस ने फ़रमाया कि हम लोग हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ एक रोज़ निकले। पस आपको क़ज़ाए हाजत की ज़रूरत हुई और आप की आदत यह थी कि जब आप क़ज़ाए हाजत के लिए निकलते तो दूर निकल जाते । मैं एक बरतन में आप के लिए पानी लाया। आप दूर निकल गये। मैंने आप के पास लोगों के झगड़ने की आवाज़ सुनी कि ऐसी आवाज़ पहले नहीं सुनी थी। फिर आप वापस आये और फ़रमाया बिलाल ! मैं ने अर्ज़ किया, बिलाल हाज़िर है। आप ने दरयाफ़्त फ़रमाया क्या तुम्हारे पास पानी है? मैंने अर्ज़ किया जी हां। (शायद वुज़ू की गरज़ से दर्याफ़्त फरमाया हो) आप ने फ़रमाया मुस्लिम जिन्नों और मुशरिक जिन्नों में आपस में झगड़ा हुआ। उन लोगों ने मुझ से मांग की कि उन के क़ियाम का फ़ैसला कर दूं। पस मैं ने मुसलमान जिन्नों को पहाड़ों और गांवों में रहने को कह दिया और मुश्रिक जिन्नों को समुन्दर के करीब निचली ज़मीन पर रहने को कह दिया। (अल मुअ़जम–अल–कबीर लित्तब्रानी हदीस नं० १४३)

हदीस ज़ईफ़ है और अगर साबित हो तो इससे मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ मुस्लिम जिन्नों को पहाड़ों पर और कुछ मुश्रिक जिन्नों को समुन्दर के क़रीब रहने को फरमा दिया था। ज़ाहिर है कि यह उन्हीं जिन्नों की बात है जो हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास झगड़ा ले कर आए थे। जिन्नों की तादाद यक़ीनन इन्सानों से ज़ियादा है। सारी दुन्या के जिन्न कहां और कैसे रहते हैं इसकी तफ़्सीलात हम को नहीं बताई गईं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद की रिवायत में है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मुझे अपने साथ ले गये और जिन्नों के आसार आग जलने की जगह चूल्हे वगैरा दिखाये यह बात सहीह हदीस से साबित है, मगर इसे तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का मुअ्जिज़ा ही कहा जायेगा इसलिए कि आम हालात में हम लोगों को उनके आसार और निशानात दिखाई नहीं देते।

शयातीन गुनाहों की जगह पर रहते हैं।

अल्बत्ता शयातीन जिन्नों के बारे में मुख़्तलिफ़ रिवायात मिलती हैं। यह भी मिलता है कि वह गन्दी जगहों पर रहते हैं। फिर शैतान तो गुनाहों की जगहों पर रहता ही है कि उसकी कोशिश से गुनाह होते हैं। वह इबादत गाहों में भी पहुंचता है यहां तक कि हरमैन शरीफ़ैन में दाख़िल हो कर लोगों की इबादतों में ख़लल डालता है। इन्सान जब बिस्मिल्लाह कह कर घर में दाख़िल नहीं होता और बिस्मिल्लाह कह कर खाना नहीं खाता तो शैतान अपने साथियों से कहता है कि अब यहां रात गुज़ारी का सामान है और खाने का भी । इस रिवायत से साबित हुआ कि हर काफ़िर घर में शैतान जिन्न रहता है इस लिये कि वह न बिस्मिल्लाह कह कर घर में दाख़िल होता है न बिस्मिल्लाह कह कर खाना खाता है। इसी तरह उस मुसलमान घर में शैतान जिन्न रात गुजारता है जो बिस्मिल्लाह कह कर घर में दाख़िल नहीं होता।

जिन्न एक न दिखने वाली मख़्लूक़ है इस लिए उसके बारे में क़ियासात से कुछ साबित करना सहीह नहीं हैं जो बातें किताब व सुन्नत से साबित हैं उन ही को मानना चाहिए और उनहीं पर इक्तिफ़ा करना चाहिए।

पेशावर आमिल आम तौर से धोखा देते हैं, किसी आमिल के क़ब्ज़े में कोई जिन्न नहीं होता अल्बत्ता काफ़िर जिन्न किसी आमिल से बड़ा गुनाह करवाकर क़ब्ज़े में आने का धोखा दे सकता है हक़ीक़त में वह शैतान जिन्न आमिल को अपने क़ब्ज़े में लेकर गुनाह करवाता है। अल्बत्ता किसी बुज़ुर्ग की ख़िदमत में कोई जिन्न हाज़िर भी हो सकता है और बुज़ुर्ग की ख़िदमत भी कर सकता है।

यह मेरा अनुमान है सही बात अल्लाह ही को मालूम है।

बाज़ जिन्नों को इख़्तियार है कि वह चाहें तो अपनी शक्ल बदल कर किसी जानवर की शक्ल या किसी इन्सान की शक्ल में आ सकते हैं।

कर्नाटक में तीन हज़ार अफ़राद ने कादियानियत से ताईब होकर इस्लाम क़बूल कर लिया

ऐन्टी अहमदिया मूवमेन्ट इन इस्लाम की नुमाया कामयाबी, मुमेन्ट की खिदमत काबिले तहसीन, कादियानियत का अंजाम आखिर शिकस्त ही है। *अमीरे अहरार*

गुलबरगा (अल–अहरार) ऐन्टी अहमदिया मुमेन्ट इन इस्लाम की कोशिशों से पोस्ट रंगम पेठ, ताल्लुका शोला पुर जिला गुलबरगा (कर्नाटक) के १२ गांव के तकरीबन एक हजार घरानों के तकरीबन तीन हजार अफराद ने कादियानियत से तौबा करके इस्लाम कबूल कर लिया।

सदर मजलिस तहफ्फुज खत्मे नुबूव्वत मौलाना सैय्यद सिद्दीक अहमदइ इशाअती मिल्ली ताल्लुका ज्यूरगी जिला के फरमान के मुताबिक और अन्य अराकीन अरसा तीन साल से तहफ्फुज खत्मे नबुव्वत का काम कर रहे थे। जिसमें उन्हें दिक्कत और परेशानी और नाकामी का सामना करना पड़ रहाथा। क्योंकि कादियानी मुबल्लिगीन ने गांव वालों के जेहनों की पालिश करके कादियानियत के सांचे में अच्छी तरह से ढाल लिया थां जिसकी वजह से उनकी तब्लीग भी कुछ काम नही आ रही थी। लेकिन एन्टी अहमदिया मुमेन्ट इन इस्लाम का प्रकाशित कर्ता पम्फलेट कुन्डी जुबान में तरजुमा कराकर शाया किया गया और गांव–गांव में कादियानियों को पांच लाख रूपया की इस्लामी इनामी चैलेन्ज और अन्य लेटरेचर और फतवा और किताबें तकसीम किये गये जैसे हजरत ईसा अलै. की कब्र कश्मीर में नहीं वगैरा हैं। एहतशामुलहक साहिब और डा.राशिद अली साहिब के शाया करदा पांच लाख रूपया के इनामी चैलेन्ज झूठे नबूव्वत व रिसालत के दावेदार मिर्जा कादियानी और उसके मुबल्लिगीन के हलक में कांटा साबित हुआ।

गांव वालों ने कादियानी मुबल्लिगीन से इनामी चैलेन्ज का जवाब तलब किया औरइनाम हासिल करने के लिए कहा। जिस पर कादियानी मुबल्लिगीन ने फरार होने में अपनी आफियत समझी और कादियानी वहां से भाग खड़े हुए जिस के नतीजा में तअल्लुक शोलापुर जिला गुलबरगा के ६ घर यहात, चकसर बहाल के १५० घर, शबटकी के ४० घर, बोनल के ८० घर, नागराल के १०० घर, गली के १०० घर जोरेशोरहार्ल के ११० घर और जिला ज्योगी ताल्लुका के हरेगा के १०० घर, कुरलकण्डी के ८० घर, और इम्ला आबाद के ६० घरानों ने बहुत आसानीसे सिर्फ और सिर्फ ऐन्टी अहमदिया के इनामी चैलेन्ज से तकरीबन तीन हजार अफराद ने कादियानियत से ताईब होकर कबूले इस्लाम कर लिया। इन तमाम देहातों से कादियानियत को सफहे हस्ती से मिटा दिया गया है। मौलाना सिद्दीक अहमद इशाअती के कौल के मुताबिक जिद्दी कट्टर पंथी कादियानियों ने कबूले इस्लाम पर ऐन्टी अहमदिया मुमेन्ट इन इस्लाम के मुख्तसरन तहरीर करदा इस्लामी इनामी चैलेन्ज पम्फलेट की तारीफ की और एहतशामुल हक साहिब की इन कोशिशों और काविशों को सराहा जिसके जरिये से उन्हे जहन्नम में जाने से नजात मिली। और कादियानी मुबल्लिगीन का रूपयों का लालच भी उनके इमान को डगमगा नहीं सका।

काबिले जिक्र है कि कर्नाटक के जिला गुलबरगा के अक्सर देहात में कादियानियों ने शातिराना चालें चलते हुए लबादा इस्लाम में पहले तो मुसलमानों को अपने दामे फरेब में फंसाया और फिर उनको कादियानियत में दाखिल कर लिया भोले भाले मुसलमान उन कादियानियों को अपना दोस्त समझते रहे लेकिन जब उन पर हकीकत अफशा हो गई तो उन भोले भाले मुसलमानों में इश्क रसूल स. का एक तूफान मोजजन हुआ जिस ने कादियानियत को इस खित्ते में पाश–२ कर दिया। कर्नाटक में कादियानियत के खिलाफ नुमाया खिदमात अंजाम देने पर मजलिस अहरार इस्लाम हिन्द के कौमी सदर अमीरे अहरार मौलाना हबीब–उर–रहमान सानी लुधियानवी ने ऐन्टी अहमदिया मुमेन्ट इन इस्लाम

(शेष पेज ३८ पर)

मनफ़ी (नकारात्मक) कोशिशों के मुक़ाबले में मुस्बत (सकारात्मक) कोशिशों को ज़ियादा मंसूबा बन्द व तेज़तर करने की जरूरत है

(६ मई २००४ के दीनी तालीमी कौंसिल के अधिवेशन में मौलाना डॉ० सईदुर्रहमान आज़मी का सम्बोधन)

"दीनीतालीमी कौंसिल केवल एक सैद्धान्तिक आन्दोलन नहीं है। इसका सम्बन्ध दीनी अकीदों (आस्थाओं) से है ताकि नई नस्ल के इमान व विश्वास की फिक्र की जा सके और बचपन में ही इनके दिलो–दमाग में दीन व शरीअ़त (इस्लामी नियम कानून) की बुनियाद को सुदृढ़ (पक्का) किया जा सके। इस लिहाज़ से दीनी तालीमी कौंसिल के काम की हैसियत "बुनियादी पत्थर" की है जिस के द्वारा नई नस्ल में ईमान की पुख्तगी को यकीनी बनाया जा सके। उन पर बचपन में ही दीन व ईमान का रंग ऐसा गालिब (प्रबल) हो कि फिर इस बच्चे का किसी भी गैर इस्लामी रंग में रंग जाने की सम्भावना ही बाकी न रहे। जिन्दा कौमों का यह तौर तरीका रहा है कि वह अपने लिए आगे बढने की पोजीशिन को चुनती है, सुरक्षात्मक रूख और क्षमायाचना सा अन्दाज उसका व्यवहार नहीं हो सकता नहीं वह मांगों की पुकार लगाने में अपनी शक्ति खर्च करती हैं। संविधान (दस्तूर) ने जो अधिकार दिए हैं, उनसे वह बेपरवा भी नहीं रहतीं मगर केवल उन्हीं पर निर्भर भी नहीं रहतीं, वह अपनी दुन्या आप पैदा करती और ज़िन्दगी का सुबूत देती हैं।

दीनी तालीमी कौंसिल की तहरीक (आन्दोलन) का बुनियादी उद्देश्य और उसकी असल रूह पर निगाह जमाए रखने की जरूरत है। असल उद्देश्य लक्ष और निशाने पर ध्यान केन्द्रिति करने की आवश्यकता है। उस का जाइज़ा (समीक्षा) लेते रहने की जरूरत है कि काम में प्रगति हो रहे है या नहीं। लक्ष की प्राप्ति में समाज पर हमारी पकड़ बन रही है या नहीं। इन दिनों इस काम की अहमियत व सार्थकता बल्कि तकाजा व जरूरत पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है। इन दिनों अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों की दिशा देखिये। वर्तमान वातावरण का जाइजा लीजिए। एक सैलाबे बला है जो इस्लामी पहचान को नऊज़बिल्लाह घास फूस की तरह बहा ले जाना चाहता है। एक तूफान है जो ईमान व (अकीदा) विश्वास के नशेमन (घोंसले) को तहोबाला कर देना चाहता है इत्मिनान है तो इस बात का कि अल्लाह का यह नूर (प्रकाश) बुझाए न बुझेगा लेकिन प्रश्न यह है कि हम दीन का नाम लेने वाले और उसका झण्डा उठाने वाले दीन और ईमान व अक़ाअेद (आस्था) की सुरक्षा के लिए और मुख्यकर नयी नस्ल को ईमान व अकाअेद पर काइम रखने के लिए क्या कर रहे हैं? विरोधी कोशिशें जिस पैमाने पर हो रही हैं, उससे बड़े पेमाने पर और उससे कहीं अधिक संगठित व योजनाबद्ध तरीके पर हमे अपनी कोशिशें तेज़ करना होंगी। इस्लाम की यह फितरत (प्रकृत) है कि वह परिस्थितियों की सख्ती और मुखालफत में और अधिक पनपता और फैलता है मगर आवश्यकता अमल और लगातार कोशिश की है केवल खुश करेन वाली बातों से काम नहीं चलेगा।

हमारी एक बड़ी बीमारी तालीम के लिए खर्च न करने का रूजहान बनता जा रहा है जबकि तालीम कौमों के लिए तरक्की ओर जिन्दगी के लिए नुस्ख–ए–कीमिया (अचूक औषध) है। जनरल तालीम पर तो हम कुछ खर्च भी कर लेते हैं लेकिन दीनी तालीम पर खर्च करने का रूजहान नही है। एक तरफ दीन के सम्बन्ध से नई नस्ल के ईमान अकीदे पर डाका डालने और दीनी पहचान को समाप्त करने की विरोधी पक्ष की कोशिशें हैं और दूसरी तरफ हमारा दीनी तालीम के सम्बन्ध से यह अफसोसनाक और बेपरवाही का चलन! आप ही बताएं कि हम आखिर किस दिश में जा रहे हैं?

रखिये गालिब मुझे इस तल्ख नवाई में मआ़फ़
आज कुछ दर्द मेरे दिल में सिवा होता है

●●●
●●

अल्लाह की तरफ़ दौड़ो

हम्माद उमरी

नोट : जनाब मौलाना *अबुल बयान हम्माद* उमरी की यह नज़्म बहुत पसन्द आई । क़द्रे तसर्रुफ़ के लिए हम्माद साहिब से मअ़ज़िरत ख़्वाह हूं।

ऐ रब के लिए जीने वालो
और रब के लिए मरने वालो
क़ुर्आन का ये पैग़ाम सुनो
दौड़ो तुम अपने रब की तरफ़

ये अर्ज़ व समा ये ज़ेरो ज़बर
सब दौड़ रहे हैं रब की तरफ़
ये काहकशां ये शम्सोक़मर
सब दौड़ रहे हैं रब की तरफ़
ये शाख़ो शजर ये शामो सहर
सब दौड़ रहे हैं रब की तरफ़
ये लाल–ओ–गुल ये लअ़लो गुहर
सब दौड़ रहे हैं रब की तरफ़
ऐ रब के लिए जीने वालो
और रब के लिए मरने वालो
क़ुर्आन का ये फ़रमान सुनो
दौड़ो तुम अपने रब की तरफ़

छाया हुआ सारी दुन्या पर
फ़रसूदा निज़ामे बातिल है
बातिल का निज़ामे फरसूदा
यह ज़हरे हिलाहिल क़ातिल है
यह ज़हरे हिलाहिल पी कर भी
क्यों मिल्लते बैज़ा ग़ाफ़िल है
मंजधार में उसकी कश्ती है
और दूर बहुत ही साहिल है
ऐ रब के लिए जीने वालो
और रब के लिए मरने वालो
क़ुर्आन का ये फ़रमान सुनो
दौड़ो तुम अपने रब की तरफ़

हर शै की यही तो फ़ितरत है
दौड़े है वह अपने रब की तरफ़
जिस दिल में ज़रा भी ख़शीयत है
दौड़े है वह अपने रब की तरफ़
फ़िरदौस की जिस को चाहत है
दौड़े है वह अपने रब की तरफ़
अल्लाह की जिस पर रह़मत है
दौड़े है वह अपने रब की तरफ़
ऐ रब के लिए जीने वालो
और रब के लिए मरने वालो
क़ुर्आन का ये फ़रमान सुनो
दौड़ो तुम अपने रब की तरफ़

दौड़ो गे न गर तुम रब की तरफ़
तुम माल की जानिब दौड़ोगे
दुन्या की तरफ़ और दुन्या के
जंजाल की जानिब दौड़ो गे
शैतां ने जो फैला रखा है
उस जाल की जानिब दौड़ोगे
तुम बच न सकोगे फ़ित्नों से
दज्जाल की जानिब दौड़ोगे
ऐ रब के लिये जीने वालो
और रब के लिए मरने वालो
अल्लाह का ये पैग़ाम सुनो
दौड़ो तुम अपने रब की तरफ़

इस्लाम के मुख़्लिस जां बाज़ो
इस्लाम के सच्चे फ़रज़न्दो
गुफ़्तार के तुम ग़ाज़ी न बनो
मैदाने अ़मल में आ जाओ
दुन्या से मिटाओ शिर्को बदी
तौह़ीद की किरनें फैलाओ
इस्लाम को ग़ालिब करना है
पैग़ाम ये सब को पहुंचाओ
ऐ रब के लिए जीने वालो
और रब के लिए मरने वालो
क़ुर्आन का ये पैग़ाम सुनो
दौड़ो तुम अपने रब की तरफ़

सोये हो अगर तुम उठ बैठो
बैठे हो तो हिम्मत कर के उठो
उठ कर जो खड़े तुम हो जाओ
मंज़िल की तरफ़ तुम चल निकलो
मंज़िल है तुम्हारी ख़ुल्दे बरीं
फ़िरदौस की जानिब तेज़ चलो
अल्लाह पुकारे है तुम को
अल्लाह की जानिब तुम दौड़ो
ऐ रब के लिये जीने वालो
और रब के लिए मरने वालो
क़ुर्आन का ये फ़रमान सुनो
दौड़ो तुम अपने रब की तरफ़

अल्लाह ने भेजा अह़मद को
है ख़ात्म रिसालत उन ही पर
दज्जाल है जो अब दअ़्वा करे
कि वह़्य उतरती है उसपर
हर साहिबे बिद्अ़त से कह दो
है दीने मुह़म्मद अकमल तर
यह विर्द रहे चलते फिरते
रह़मत हो ख़ुदा की अह़मद पर
ऐ रब के लिए जीने वालो
और रब के लिये मरने वालो
क़ुर्आन का ये फ़रमान सुनो
दौड़ो तुम अपने रब की तरफ़

अल्लाह जो रब है हम सब का
ख़ालिक़ है वही, माबूद वही
राज़िक़ भी वही ह़ाकिम भी वही
सुल्तान वही मस्जूद वही
हर दौड़ का और हर कोशिश का
मतलूब वही मक़सूद वही
ह़म्माद ये सारी ह़म्दोसना
है जिस के लिए मह़मूद वही
ऐ रब के लिए जीने वालो
और रब के लिए मरने वालो
क़ुर्आन का ये फ़रमान सुनो
दौड़ो तुम अपने रब की तरफ़

जो क़ौम अपने अक़ीदे (आस्था) व तशक्खुस (पहचान) की फिक्र नहीं करती, वह पिघल जाती है

दीनी तालीमी कौंसिल के अधिवेशन दिनांक ६ मई २००४ में मौलाना सय्यद राबे हसनी नदवी अध्यक्ष कौंसिल का एक भाषण

"बात एहसास (अनुभव) की है। हमें मौसम की सख्ती का अनुभव होता है, जाड़े और गर्मी का अनुभव होता है मगर अफसोस कि इस का एहसास नही होता कि हमारी नस्ल के इमान व अकीदा सुरक्षित है या नहीं। हमारी नस्ल इस्लाम की दावत देने वाली होगी या खुदा न करे बागी होगी। इसकी चिन्ता और एहसास हम से उठ जाता है। नयी पीढ़ी किस दिशा में जा रही है, उनके इमान व आस्था का क्या हाल है। माता पिता के साथ उन का व्यवहार क्या है यह वह बातें हैं जिन को हम दिन प्रतिदिन देखते रहते हैं।

दीन से बगावत के लिए योजनाबद्ध प्रयत्न हो रहा है और इस प्रकार के माहौल बनाने के लिए कोई कसर उठा रखी नहीं जा रही है। विभिन्न तरीकों से इसके लिए वातावरण बनाया जा रहा है। इस समस्या का हल दीनी तालीमी कौंसिल के प्लेटफार्म से पेश किया गया था और वह हल यह है कि हम नई नस्ल का बुनियादी जेहन बनाने के लिए फिक्रमन्द हो जाएं, कमर बस्तः हो जाएं, उसको ओढ़ना बिछौना बना लें और वह फिक्र हम पर सवार हो जाए अन्यथा दुश्मनों के बुरे इरादों से कौन अवगत नहीं। वह तो चाहते हैं कि दीन के सम्बन्ध को हमारे मन से मुख्यकर हमारी नई नस्ल के जेहनों से खुरच कर निकाल दें। एक तरफ तो यह सूरतहाल और दूसरी तरफ यह हमारी लापरवाही। दीन के अकाइद (आस्था) की सुरक्षा व प्रसार के बिनियादी काम से हमारी यह बेरुखी! मुझे इजाजत दीजिए यह कहने की कि ऐसी कौम जिन्दा नहीं रह सकती। इतिहास इसका गवाह हे कि बेपरवाही को जिस कौम ने अपनाया और अपने अकीदों (विश्वासों) की सुरक्षा व सलामती की कोशिश जिस कौम ने नहीं की वह मिट गई। दिल पर पत्थर रखकर कहता हूं कि हम उसी रास्ते पर जा रहे हैं। अल्लाह हमारी हिफाजत (रक्षा) फरमाए। हमारे और हमारी नस्लों के ईमान व अकीदा की हिफाजत फरमाए। इस देश में दीनी अकीदों की सुरक्षा के लिए जो कोशिशें हुईं उनमें से एक दीनी तालीमी कौंसिल की कोशिश है। बे सरोसामानी के बावजूद, कार्यकर्ताओं की कमी के बावजूद इसका कारवां रवां दवां है और एक उद्देश्य और निशाना मुकर्रर करके गफलत से जगाने का काम कर रहा है। शऊर (विवेक) अगर न जागे तो कौमें मौत के घाट उतर जाती हैं। इस लिहाज से दीनी तालीम कौंसिल एक बुनियादी फरीजा (कर्तव्य) अदा कर रही है। अल्लाह सलामत रखे हमारे मदरसों को और उनकी हिफाजत फरमाए कि यदि मदरसे न होते तो दीन से हमारा सम्बन्ध बाकी न रहता या नाम मात्र रह जाता। कालल्लाह और कालर्रसूल के नग़मे जहां सुनाई देते हैं वह मदरसे न होते तो दीनी पहचान बाकी रहने और रखने की चिन्ता समप्त हो जाती।

शऊर (विवेक) जागता रहे इसकी बराबर फिक्र करने की जरूरत है। अगर खुदा न करे शऊर की फिक्र से बेपरवाही और गफलत बरती गई तो फिर खुदा ही खैर करे। दीन पर, उसकी तालीम पर उस से सम्बन्धित कामों पर वक्त लगाने और माल खर्च करने का मिजाज शऊर के जागते रहने की बदौलत बनेगा। दीनी अकीदे को मिटाने और मुशरिकाना (अल्लाह के साथ किसी और को साझी बनाना) अकीदों को मिटाने की कोशिश को नाकाम बनाने का यही रास्ता है कि नई नस्ल के ईमान व अकीदे की सुरक्षा की फिक्र को अपनी निजी फिक्र बना लीजिए। इस से अपना इमानी फरीजा (कर्तव्य) जानिए और इसकी खातिर जो कुछ कर सकते हों उसको कर गुजरें। इसलिए कि हम सब इस फरीजा की अदाएगी के लिए अल्लाह के यहां जवाब देह है कि तुम दीन को मिटते देखते

(शेष पेज ३८ पर)

अमेरिका में दुराचरण की चरम सीमा

आरिफ अज़ीज़

पश्चिमी देशों मुख्यकर अमेरिका की सार्वजनिक जीवन में यौन दुराचार की सीमा यहां तक बढ़ गई है कि उसने अमेरिकी समाज में एक मान्य व्यवस्था की शक्ल इख़्तियार कर ली है।

पहले जो लोग आजाद यौन सम्बन्धों पर नाक भौं चढ़ाते थे आज इन घटनाओं को बयान करने में मजा लेते हैं।

यही कारण है कि अमेरिका में यौन दुराचरण पर से पर्दा उठाने या इस प्रकार की घटनाओं को उछालने के क्रियाकलापों ने एक पसन्दीदा उद्योग का रूप ले लिया है।

यहां जो उद्योग तेजी से फलफूल रहा है वह माईकिल जैक्सन की समलिंगी क्रियाकलापों से पर्दा उठाने और पूर्व राष्ट्रपति बिल किलिंटन की विभिन्न महिलाओं से आजादाना यौन सम्बन्धों के भेद खोलना है।

अमेरिका में बड़े लोगों और प्रभावशाली लोगों की निजी जिन्दगी में झांकने का यह अमल इस कदर बढ़ता जा रहा है कि इससे वर्तमान ही नहीं भूतकाल के बारे में बराबर नई नई जानकारी प्रकाश में आ रही है।

आज का अमेरिकी रिसर्च स्कालर जान कनेडी के राजनीतिक व सामाजिक सेवाओं या एक कम उम्र राष्ट्रपति के उनके क्रियाकलापों की समीक्षा नहीं करता बल्कि उस का ध्यान इस बात पर केन्द्रित रहता है कि जान कनेडी के यौन सम्बन्ध किन महिलाओं से थे और इसकी जानकारी उनकी पतनी जैकुलीन कनेडी को किस हद तक थी और अतिसंभोगी एक्टरेस मारलिन मनरो भी इसमें शामिल थी या नहीं। इसी प्रकार स्वयं जैकुलीन कनेडी की जिन्दगी रंगीन व संगीन रही है?

कितने अचंभे की बात है कि पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बिल किलिन्टन का यौन सम्बन्ध एक महिला कर्मचारी से होने का मामला प्रकाश में आया तो उस पर अमेरिकी जनता की प्रतिक्रिया ऐसी नहीं हुई जैसा कि होना चाहिए थी। अर्थात उन्होने अपने राष्ट्रपति की कामुक विलास्ता को परमपरागत जीवन शैली के रूप में स्वीकार लिया। एक ऐसे समाज में वैज्ञानिक, भाषाई और तहजीबी विषयों की उपेक्षा करके पूरी तरह भोग विलास में ग्रस्त हो गया हो, देरसवेर उसका पतन अवश्य होगा परन्तु पूर्वी देशों की इस नई पीढ़ी पर भी रोना आता है जिसने पतनशील समाज को अपना आदर्श बना लिया है।

(पृष्ठ ३७ का शेष)

रहे, उसको बचाने के लिए तुम ने क्या किया? निजी फाइदे से ऊपर उठ कर सोचिए। अफसोस कि अब दीनी कामों में भी जाती फाइदे को मुकद्दम रखा जा रहा है(वरीयता दी जा रही है) और अन्तिम बात यह कहनी है कि अल्लाह की दया व कृपा तथा अनुकम्पा (फ़ज़्ल) के बिना कुछ नही हो सकता और उसक फज़्ल उसी समय प्राप्त होता है जब उसकी मर्ज़ी के अनुसार जीवन व्यतीत किया जाए। बनी इस्राईल की मिसाल हमारे सामने है उससे नसीहत और सबक़ लेने की ज़रूरत है।

(पृष्ठ ३४ का शेष)

के नाजिमे आला जनाब एहतशामुल हक बारी और डा. राशिद साहिब को मुबारक बाद देते हुए मुमेन्ट के काम को काबिले तहसीन बताया है। अमीरे अहरार ने कहा कि अगर इसी तरह मुल्क के हर गोशे में तेजी के साथ तहफ्फुज खत्मे नबुव्वत का काम हो तो कादियानियत कादियान में सिमट जाएगी। उन्होंने कहा कि कादियानियत का अंजाम आखिर शिकस्त है। (अल अहरार से गृहीत)

Anees Ahmad 0522-2242385(S)

Famous Foot Wear

Wholeseller and Reteiler, Shoes, Chappal Sandle, Sleeper, Bally etc.

301/11, Saray Bans Akbari Gate,

0522-2214889

BOMBAY TAILORS

Specialist in Fusion Stiching

For Modern People

85, Hazaratganj, Lucknow-226001

दुष्कर्म हमें स्वीकार नहीं

हैदर अली नदवी

सत्कर्म के हम अनुयायी हैं
दुष्कर्म हमें स्वीकार नहीं
सत्कर्म से ईश्वर राजी हैं
दुष्कर्म उसे स्वीकार नहीं
हिंसा, हत्या रक्तपात
दुष्कर्मों के सब कार्य हैं यह
अत्याचार हो मानव पर
यह ईश्वर को स्वीकार नहीं
नफरत का माहौल रहे
हैं अत्याचारी चाह रहे
सदाचार अपनाने वालों
को यह तो स्वीकार नहीं
न्याय की हत्या करने वाले
सत्यवाद के दुशमन हैं
सत्य के जो अनुयायी हैं
अन्याय उन्हें स्वीकार नहीं
रिशवत, चोरी गबन, घुटाला
जिन का प्यारा पेशा है
दिल के काले इन दुष्टों को
कर्म भले स्वीकार नहीं
धन दौलत और पद पाकर जो
दुष्ट क्रूर बन जाते हैं
हरि कहता है ऐसे अधर्मी
हम को भी स्वीकार नहीं
शासन सत्ता के बल पर
जो उत्पात मचाएगा
दोजख में वह जाएगा
वां क्षमा मांग स्वीकार नहीं
दुख्यारों की दशा देखकर
करूणा जिन में आए ना
मानव रूपी ऐसे दानव
दुन्या को स्वीकार नहीं

काले गोरे, ऊंच नीच में
मानव को तुम बांटो ना
यह तो कलंक है मानवता पर
हम को यह स्वीकार नही
लाभ हानि की चिन्ता छोड़ो
मानव सेवा कर लो तुम

कर्म स्थल यह दुन्या है
मृत्यु पे कुछ स्वीकार नहीं
अकरमकुम अत्काकुम बेशक
यह कुर्आन बताता है
उच्च बनोगे कर्म से हैदर
वंश गर्व स्वीकार नहीं

MOHD. ASLAM
(S) 268845, 213736
(R) 268177, 254796

Haji Safiullah & Sons

Jwellers

Nagina Market Akbari Gate, Lucknow
Opp. Gadbad Jhala, Aminabad Road, Lucknow.

(Shop) : 266408
(Resi.) : 260884

Iqbal & Co.

Deals :
FRIEND EMBROIDERY MACHINE

Deals in :
Embroidery Raw Materials Machine & Spare parts etc.

Pul Firangi Mahal, Behind Pata Nala Police Chowki, Chowk, Lucknow- 2260063

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

हबीबुल्लाह आज़मी

●पूरे संसार में ई मेल्स पर अमेरिकी सेक्योरिटी एजेंसियों की नज़र :

पूरी दुन्या में अमेरिकी सेक्योरिटी एजेंसियां ई–मेल पर बराबर नजर रखती हैं। वह अमेरिका पर आतंकवादी हमलों के पता लगाने पर नियुक्त हैं। यह बात स्टीन फोर्ट यूनिवर्सिटी के अंडर ग्रेज्युएट अंकितफादिया ने बताई है। फादिया ने बताया कि केवल ई–मेल नहीं, फ्यूरेट सर्च इंजिन में आप की हर इन्ट्री भी उनकी नजर में हो सकती है क्यों कि वह जानना चाहेंगे कि आप कैसी सूचना की खोज में हैं। फादिया ने बताया कि इंटरनेट की अब हर घर और दफतर में पहुंच हो गई है। अतः पराइवेसी की समस्या और खतरे सामने आ रहे है। लिमका बुक आफ रेकार्ड में २००२ का प्रिंस आफ दी एयर चुने जाने वाले फादिया ने बताया कि तिजारत को भी कम्प्यूटर मुजरिमों से खतर लाहक़ है लेकिन व्यापारिक एजेंसियों को चिन्तित होने के बजाए अपनी कार्यविधियों को सुरक्षित बनाने पर ध्यान देना चाहिए।

इस कम उम्र हैकर ने उस समय सनसनी फैला दी थी जब उसने तीन सालपूर्व पाकिस्तानी हैक़रों के एक ग्रुप की कोशिशों को असफल बना दिया था जिसने भारतीय सरकारी कम्पनियों के बेवसाइट को बिगाड़ना चाहा था। फादिया ने एक चैटरूम में उन पाकिस्तानी हैकरों की बातें सुन ली थीं और सम्बन्धित कम्पनियों को होशियार कर दिया था।

●दुन्या का सबसे वज़नी कुर्आन करीम

दुन्या का सबसे वज़नी कुर्आन करीम जलालपुर पाकिस्तान में मौजूद है। इसके हर पारे का वज़न ५० किलोग्राम और तीस पारे का वजन १५०० किलोग्राम है। इस कुर्आन पाक को पाकिस्तानी खुशनवीस हाजी बशीर जलालपुरी ने लिखा है।इसको तैयार करने में दोसाल लगा।

इसको अमेरिका से आयात किये हुए एक विशेष प्रकार के कागज पर लिखा गया है। इसकी रोशनाई कागज, जिल्दबन्दी और उसमें प्रयोग किये गए विभिन्न रंगों में लगभग डेढ़ लाख रूपये खर्च हुए हैं। इसकी नुमाइश पाकिस्तान के हर शहर में हुई। इसके बाद इस को फैसलाबाद पाकिस्तान में अजाएब घर में सुरक्षित कर दिया गया है।

●छह साल की जार्जिया, जमीला बन गयी

क्या आप सोच सकते हैं कि कोई अरबी भाषा की लिखावट पर इतना मुग्ध हो जाए कि अन्ततः इस्लाम की गोद में चला जाए? जी हां, ऐसा हुआ है; और यह कोई किस्सा नहीं है। एक ऐसी ही छह वर्षी अंग्रेज बच्ची जार्जिया से अब जमीला बन चुकी है जो चॉकलेट की पैकिंग पर लिखे अरबी के अक्षरों की खूबसूरत बनावट को बड़े ग़ौर से देखा करती थी, जबकि उसके साथ लिखे अन्य भाषाओं की लिपि में कोई रुचि नहीं थी।

एक दिन उस बच्ची ने बड़ी मासूमियत से अपनी मां से पूछा कि यह कौन–सी भाषा की लिखावट है? मां ने बड़ी चालाकी से जवाब दिया कि यह अरबों और मुसलमानों की भाषा है और इसे वही लोग बोलते हैं जो शान्ति प्रिय लोगों के विरुद्ध आतंकवादी कार्रवाइयां करते हैं।

मां के इस शरारत भरे जवाब ने बच्ची को तनिक भी विचलित नही किया और इस्लाम के सम्बन्ध में प्रश्न पर प्रश्न करती ही गयी। मां की यह बात उसके गले नहीं उतरी कि 'इस्लाम' आतंकवाद का पर्याय है। बच्ची ने अंततः यह कहकर सबको आश्चर्य में डाल दिया कि : "मैं तो मुसलमान हो गयी।"

वह अपनी बात पर अड़ी रही और इसी हाल में कुछ दिन बीत गये। उसने अपने घर वालों से कुरआन की प्रति मांगकर सब को अचंभे में डाल दिया उसने अपनी यह मांग बराबर जारी रखी यहां तक कि वह छह वर्ष की हो गयी तो उसकी मां ने उसके जन्मम दिन पर उसका पसंदीदा तोहफ़ा पूछा। उसने जोर देकर कहा कुरआन। और उसे यह उम्मीद भी हो चली थी आज उसके जन्म दिन पर तो उसका यह पसंदीदा तोहफा तो मिल ही जाएगा। मां ने जब बच्ची की ख्वाहिश पूरी कर दी तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा और बड़े प्यार से मां के गालों को मुस्कुराते हुए चूम लिया।

वह कुरआन को हाथ में लेकर

(शेष पृष्ठ ३२ पर)